विद्यापति गोष्ठी पूर्णियाँ प्रस्तुत करैत अछि—

कौशिकी

(एक)

सम्पादक : प्रो० जगदीश मिश्र
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रकाशक : विद्यापति गोष्ठी
पूर्णिया

मूल्य : टाका मात्र

प्रकाशक :

विद्यापति गोष्ठी, पूर्णियां

१९७१-७२ केर हेतु

प्रकाशनक तिथि ४-५-७२

●

●

सम्पादक :

प्रो० जगदीश मिश्र

(भाग पृष्ठ १ सँ ४० धरिक)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(अवशेषक)

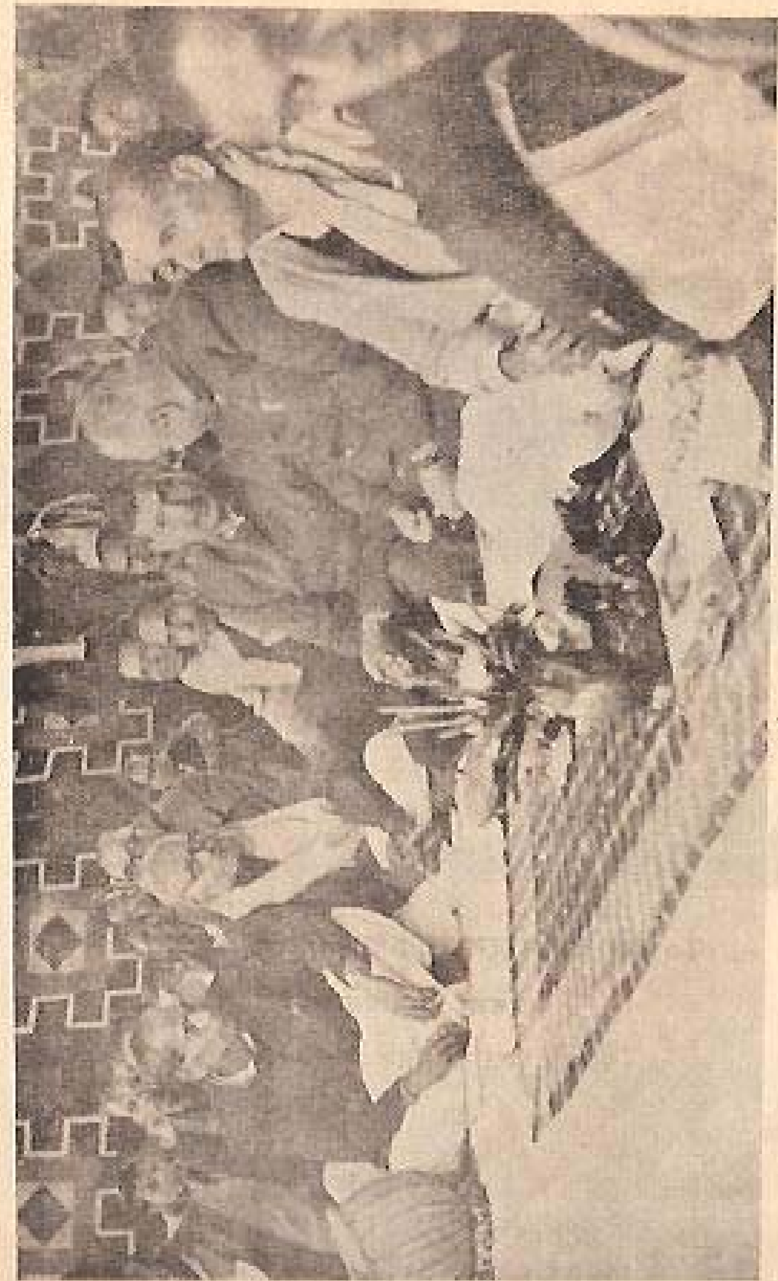
●

मुद्रक :

कालिका प्रेस, पटना–४

(आवरण तथा पृष्ठ ४१ सँ अवशेषक)

विद्यापति गोष्ठी पूर्णियाँक द्वितीय अधिवेशनक एक दृश्य



परिचय : वामाकात सँ प्रथम पंक्ति मे—श्री मुरलीधर सिंह, पं० श्री व्रजमोहन ठाकुर, श्री शुभंकर झा, आचार्य मदनेश्वर मिश्र, श्रीयुत् ललित नारायण मिश्र, श्री देवनाथ राय ।



पं० श्री ब्रजमोहन ठाकुर, एम० ए० बी० एल०

कलकत्ता विश्वविद्यालयक

पोस्ट ग्रेजुएट कौंसिलक भूतपूर्व सदस्य

परिचायिका

क्रम १ : **पूर्णियाँ वन्दना : पं० श्री शुभंकर झा**

कोशीक प्रतिये लोकक हृदय मे आतंक छलैक से आइ आनन्द मे परिवर्तित भय गेल अछि। आइ माहुर-मधुर भय गेल अछि आ जहर अमृत भय गेल अछि। सरिपहुँ पूर्णिया प्रणम्य भय गेल अछि।

क्रम २ : **युग पुरुष विद्यापति : स्व० प्रो० रमानाथ झा :**

पृष्ठ : २ सँ १८ धरि : विद्यापति मात्र कविये नहि, युग पुरुष छलाह। युग पुरुष ओ थीक जे अपना अनुरूपें अपन युगक सृष्टि करैत अछि। युग पुरुष, साहित्य, समाज, धर्म, राजनीति कोनहुँ सँ असम्पृक्त नहि रहि सकैत अछि। युग पुरुषक प्रत्येक गुण कें ई निबन्ध प्रतिबिम्बित करैत अछि।

क्रम ३ : **पूर्णियाँ : कविता : डा० बदरी नारायण दास : पृ० १९**

'पूर्णियाँ', कविता सँ बेसी पूर्णियाक एक्सरेप्लेट थीक। पूर्णियाँ समस्त, एकटा सुन्दरतम चित्रक रूपमे देखल जा सकैत अछि। कोकाक वनमे हँसैत प्रात, बसात मे कपैत कदलीक पात, ओसक बिन्दु सँ भीजल कमलक गंध, बिसरबाक प्रयत्न करितौं नै बिसरल जा सकैछ।

आजुक प्रगतिक दृष्टियें पूर्णियाँ सरिपहुँ 'अधफुलैल वन-फूल' थीक। प्रयोजन छैक एक एहन वातावरणक जे एहि फूल कें समीचीन विकासक अवसर दैक।

क्रम ४ : विद्यापतिक देश भक्ति : निबन्ध : डा० जयकांत मिश्र : साहित्य अकादमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि सदस्य : पृ० २० सँ २२ धरि : विद्यापतिकेर देश छल, हुनक मातृभूमि मिथिला। अपन श्रद्धा आ भक्तिक कतेक अंश मिथिला मैथिलीकें अर्पित कयलन्हि, ताही विचार विन्दुक पाएकातक वृत्त थीक ई निबन्ध। अपना प्रत्येक विन्दु मे पूर्णता रखैत।

क्रम ५ : प्राचीन मैथिलीक स्वरूप आओर विद्यापति : निबन्ध : आचार्य राधाकृष्ण चौधरी : पृ० २३ सँ २६ धरि : प्राचीन मैथिलीक स्वरूप कें विभिन्न विम्ब सँ विम्बित कैनिहार विद्यापति समस्त विश्वक छलाह। सामन्ती समाज मे रहितहुँ काव्य प्रतिभाक दुरुपयोग नहि कैलन्हि से हुनक विशिष्टता थीक। विद्यापतिक माध्यम सँ मैथिली आ मैथिलीक माध्यम सँ विद्यापति जीवैत छथि।

क्रम ६ : विद्यापतिक : काव्य मे पुरुष-परिकल्पना : निबन्ध : प्रो० बालगोविन्द झा व्यथित : पृ० ६० सँ ४० धरि : पुरुषार्थ चतुष्टय की थीक ? की खाली लैंगिक विशिष्टता सँ क्यो पूर्ण पुरुष भय सकैछ ? कोन कोन एहेन गुण अछि जे पुरुषत्व कें उत्कर्ष दैत अछि ?

बालक आ नागरिकक शिक्षा लेल लीखल विद्यापतिक "पुरुष-परीक्षा" पर आधारित होइतों ई निबन्ध अपन स्वतंत्र अस्तित्व रखैत अछि।

क्रम ७ : कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिलीक स्थान कोना ? एक संस्मरण वार्त्ता : वार्त्ताकार : पं० श्री व्रजमोहन ठाकुर : पृ० ४१ सँ ५२ धरि : वास्तविक बलिदानक मूल्यांकन आवश्यक अछि। अचल कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति आजुक प्रचार तंत्र सँ अलग रहबाक इच्छुक रहितों अलग नै रहि सकैछ। कारण थीक आत्माक क्रान्ति। ताही क्रान्तिक मुखरित रूपमे ई संस्मरण वार्त्ता।

क्रम ८ : पूर्णियाँ ओ मैथिली : एक गवेषणात्मक निबन्ध : आचार्य मदनेश्वर मिश्र : पृ० ५३ सँ ५६ धरि।

पूर्णियाँक प्राचीन आ अर्वाचीन भौगोलिक स्थितिक संग पूर्णियाँक प्रशासकीय व्यवस्था मे मैथिलक योगदानक परिणामस्वरूप पूर्णियाँ मे मैथिली आ मिथिलाक संस्कृति सुरक्षित रहल। आइयो पूर्णियाँ मिथिलाकें अपन स्पन्दन सँ स्पन्दित क रहल अछि।

सम्पादकीय

—श्री रवीन्द्र

पूर्णियाँ वन्दना

लीअ पुरैनिया हमर प्रणाम ।
उत्तरमे गिरिराज हिमाला
बसल कोरमे जिनक नेपाला
निकलल जाहिसँ सरिता माला
जाहिसँ तोहर भूमि ललाम ॥
लीअ·······

दक्षिणमे जन-तारिणि गङ्गा
त्रिविधताप भय-हारिनि गङ्गा
पश्चिम कोशी पूब महानन्दा
मिलि सभ जकरा बनबए धाम ॥
लीअ······

कोशी कोष लुटाबए जत्तय
नहर सोनकन बनबए जत्तय
धान पाट तोड़ी उपजाबए
कृषक मस्त जहँ आठो याम ॥
लीअ·······

माछुर मधुर जहर अमृत भेल
रोग शोक सब दूर भागि गेल
धन्य जीव जे वास पाबिगेल
एहन न सुन्दर कोनो ठाम ॥
लीअ·······

श्री चुम्भङ्कर झा

युगपुरुष विद्यापति

काव्यजगतमे विद्यापतिक महिमा अवर्णनीय अछि, अनुपम अछि। आइसँ छओ सए वर्ष पूर्व हुनक प्रादुर्भाव मध्य-मिथिलाक एक गोट महापण्डितक वंशमे भेल जनिका लोक-निक चारुचरितक प्रभावसँ मिथिलाक जीवन अद्यापि नियमित अछि। हुनका उपजीव्य भेटलथिन्ह अपन बाल-सखा शिवइ सिंह जनिकहिटा मिथिलाक लोक हृदयसँ राजा कहलक। हुनकहि प्रमोदार्थ ओ गीत रचए लगलाह, नव रीतिसँ, नव तान ओ नव भासक, शृङ्गार रससँ ओतप्रोत, ओहि भाषामे जे ओ स्वयं बजैत छलाह, जे मिथिलाक सकल नर-नारी बजैत छल। काव्यकलारसज्ञ हुनका अभिनव जयदेव कहलक; जनता हुनका कविकण्ठहार कहए लागल। शत शत शिवगीतमे ओ महादेवकेँ कतेक उपालम्भ सुनाओल, कतेक निन्दा कएल जे ठाम ठाम तीक्ष्णतामे कुमारसम्भवक वटुक निन्दोक्तिकेँ समेत मातु करैत अछि ओ एहि द्वारा ओ गार्हस्थ्य जीवनक आनुपूर्वी चित्र आँकल, गौरीक सन गृहिणीक अभिशापक लौकिक व्याख्या प्रस्तुत कएल। व्यवहारक गीतमे ओ तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक चित्र प्रस्तुत कएल, सकल नर ओ नारीक हृदयमे सामाजिक चेतनाकेँ छापि गेलाह जे अद्यापि नहि मेटाएल अछि। ओ चमत्कार ई जे विद्यापतिक रचनामे काव्यक प्रतिभा तथा संगीतक स्वरलहरीक अपूर्व सम्मिश्रण अछि जे प्रसाद ओ माधुर्य

दूहसँ ओतप्रोत अछि ओ तेँ सर्वथा आनन्दक एकगोट अक्षय स्रोत भेल अछि। कोन आश्चर्य जे सम्पूर्ण जनजीवनक ई सुमधुर व्याख्या जपइ पढ़ैत अछि, जपइ सुनैत अछि तकरहि मुग्ध करैत रहल अछि। वस्तुतः विद्यापति हमरालोकनिक काव्यक उपवनमे ओ कोकिल सिद्ध भेलाह जनिक काकली केवल मिथिलहिटामे नहि, समस्त उत्तर भारतक भाषाक्षेत्रमे वसन्त आनि देल।

परन्तु विद्यापति कविए टा कहाँ छलाह; वृत्या ओ कवि छलाहो नहि। तेहन विशिष्ट कुलमे हुनक प्रादुर्भाव भेल छल, तेहन वातावरणमे ओ पालित ओ पोषित भेल छलाह जतएक माटि ओ पानिमे विद्याक उत्कर्ष ओ राजनीतिक गहनता तथा जटिलता सानल छल, वसातक सङ्ग उधिआइत छल। जे कथा आन व्यक्ति उपयुक्त गुरु भेटला उत्तर तत्पर भेलहिँ कष्टसँ सीखि सकैत छल, बूझि सकैत छल, से विद्यापति शैशवावस्थहिसँ राजनीतिकल्लोलिनी कर्णधार अपन गुरुजनक मुहसँ, विश्रुत विद्वद्वर्णी लोकनिक सहवाससँ अनायास अवगत करए लागल होएताह। किशोरावस्थासँ लए अपन सुदीर्घ जीवनक अन्तिम दिन धरि ओ मिथिलाक राजसभाक खानदानी दरबारी रहलाह। जनिका प्रसङ्ग एखनहु प्रवाद सुनल जाइत अछि जे जनिक तुलनामे आओर सब राजा 'छोकड़ा' ताहि शिवइ सिंहक ओ बालसखा, अन्तरङ्ग मित्र, विश्वस्त सेवक, अनुरक्त सचिव तथा महाराज-पण्डित छलाह; अन्तिम संग्रामक निमित्त प्रस्थान करबासँ पूर्व

ओ अपन छओ गोट स्त्रीकैं हुनकहि जिम्मा राखि गेल छलाह। मिथिलाक सकल नर ओ नारी इएह मानैत आबि रहल अछि जे महादेव हुनक भक्तिक अधीन भए उगना नाम धराए हुनक चाकर भेल छलथिन्ह तथा गंगाक तटपर प्राण त्यागितैं यात्रामे चलल अन्तिम राति धारसँ किछु दूर विश्राम करैत हुनका मुक्ति देबाक निमित्त गंगा अपन धार छोड़ि हिनक आवासक निकट आबि बहए लागल छलथिन्ह। एहन अलौकिक छल हिनक व्यक्तित्व, एहन अनुपम छल हिनक प्रतिपत्ति, एहन अप्रतिम छल हिनक प्रतिभा।

विद्यापति जनैत छलाह जे कीर्त्तिरक्षरसम्बद्धा ओ अपन हृद्गतभाव जे हिनक जीवनक दिशाकैं नियमित कएने रहल ई स्पष्ट लिखैत छथि,

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ।
अक्खर खम्भारम्भ जओ मञ्चावन्धि न देइ॥

अत्यन्त किशोरावस्थाहिसँ ई अपन कीर्तिवल्लिकैं पसरबाक हेतु अक्षरक खाम्ह गाड़ि गाड़ि मचान बान्हए लगलाह जे जीवनक अन्तिम समय धरि चलैत रहल। लिखबाक जेना हिनका व्यसन छलैन्हि ओ रजाबनौलीक प्रवासमे आओर नहि किछु तँ पओने छओ सएवेस पैंच पैंच ताड़क पात पर ई समस्त भागवत उतारि गेलाह। गीतकैं छोड़ि दी तैओ हिनक रचना एक व्यस्त जीवनक हेतु पर्याप्त अछि। दश गोट हिनक रचित ग्रन्थ एखन उपलब्ध अछि जाहिमे पाँच गोट

हिनक जीवनक अन्तिम बीस वर्षक कृति थिक, प्रायः सत्तरिसँ नब्बे वर्षक वार्धक्यमे संकलित जाहिमे एक एक पोथीमे सए सए उद्धरण अछि धर्म, पुराण, आगम ओ इतिहाससँ। कल्पना करबाक विषय थिक जे ताहि दिनुक समयमे जखन पोथी तड़पत पर हाथहिदासँ लिखल उपलब्ध छलैक एतेक उद्धरण ई कोना दए सकलाह? केहन छल हिनक लोकोत्तर मेधा, कतेक छल हिनका लिखबासँ प्रेम, केहन छल हिनक व्यावहारिक प्रज्ञा ओ केहन चमत्कारक छल हिनक विषय-चयन?

अतएव विद्यापतिक कथिक रूपसँ कत बड़ विशिष्ट छल हिनक व्यक्तित्वक स्वरुप जे अपन प्रतिभाक प्रसादसँ लोक आ शास्त्र दूहू विषयमे समान कृतित्व प्राप्त कएल, समान रूपसँ लोकोत्तर चमत्कार प्रदर्शित कएल ओ चिरकालक हेतु अमर छथि। वस्तुतः ओ जाही वस्तुकैं छूबल तकरहि उत्कृष्टतर बनाए छोड़ल। ई छल हुनक प्रतिभाक विशिष्टता, प्राक्तन संस्कारक असाधारणता, व्यक्तित्वक प्रभाव। परन्तु ओ युगे एहन छल जखन मिथिला प्रतिभाक विकासक हेतु अत्यन्त उर्वर छल। विद्यापतिकैं सबसँ प्रतिविशिष्टि मानि लिपैन्हि से भए सकैत अछि मुदा विद्यापतिक अतिरिक्तो एक दू नहि, अनेको महापुरुष ओहि युगमे एतए प्रादुर्भूत भेल छलाह जनिक गुणगरिमासँ मिथिला एखन धरि गौरवान्वित अछि। ओना तँ बारहम शताब्दीक आरम्भहिसँ मिथिलामे सांस्कृ-

तिक उत्थान होअए लागल मुदा ओकर उत्कर्ष विद्यापतिक जीवनकालमे चरम पर परिलक्षित होइत अछि ओ विद्यापतिक परोक्ष होइतहि जेना ओकर ह्रास होअए लागल। विद्यापतिक युग मिथिलाक इतिहासमे स्वर्णयुग सिद्ध भेल।

मिथिलामे नवयुगक सूत्रपात शाके १०१६ मे मानल जाइत अछि जखन कर्णाटकुल चूड़ामणि नान्यदेव सिमराओमे अपन राज्यक शिलान्यास कएल। ताहिसँ पूर्व पौराणिक युगक कथा नहि हो, कलियुगमे मिथिलाक स्वतन्त्र राजा कहियो नहि भेल छलाह। कौटिल्यक अर्थशास्त्रसँ अवगत होइत अछि जे जनकक वंशधरकेँ कौनहु राजाक हेतु गर्हित अपराध कन्या पर बलात्कारक कारणेँ राज्यसँ च्युत कए एतए विदेहक गण-राज्य स्थापित भए गेल जे क्रमशः लिच्छवीलोकनिक सङ्ग मिलि वृज्जिक संघराज्यक स्थापना कएल। इतिहासमे एहि संघक बड़नाम अछि कारण महात्मा बुद्ध अपन संघक निर्माण वृज्जिसंघक आदर्श पर कएने छलाह। जैनधर्मक प्रवर्त्तक महावीर वैदेह छलाह, वैदेहीपुत्रः मगधक सम्राट अजातशत्रु वैदेहीपुत्र छलाह। इएह अजातशत्रु वृज्जिसंघक उच्छेद कए मिथिलाकेँ मगधक अधीन कएल। पंद्रह सए वर्ष सँ अधिक दिन धरि मिथिलाक राजनीतिक स्वतन्त्रता अपहृत रहल। कतेक दिग्विजयी राजा मिथिलाक विजयक गौरव अपन अपन प्रशस्तिमे लिपिबद्ध कराए गेल छथि। मिथिला कहिओ युद्ध नहि कएल;

राजनीतिक स्वतन्त्रताकेँ महत्त्व नहि देल; अपन आचार ओ विचार जीवनक क्रम ओ विचारक धारा स्वतन्त्र राखल। मुदा राजनीतिक स्वतन्त्रता नहि रहलेँ शान्ति ओ समृद्धि नहि रहए ओ शान्ति एवं समृद्धिसँ जे कलाक विकास चाही से होअए नहि पाओल। सन्तोष ओ त्याग—एही दूनू गुणक बलसँ मैथिललोकनि धर्मबुद्ध्या विद्याक व्यवसाय करथि ओ नीरस जीवन बितबैत अपन अस्तित्व धरि बचबैत रहलाह। अतएव शाके १०१६ मे जखन सुदूर कर्णाटक वीर ओ पण्डित नान्यदेव मिथिलामे राज्य स्थापित कएल तँ मिथिलाक लोक हुनका पूर्ण स्वागत कए राखल ओ आत्म-समर्पण कए देल। कार्णाट राजालोकनि विदेशी होइतहुँ मिथिलाकेँ अपन बूझि शासन करए लगलाह ओ पंद्रह सए वर्षक अराजकतासँ थाकल मैथिल जाति अपन राजा ओ अपन राज्य पाबि स्वतन्त्र ओ स्वच्छन्द भए विकासक पथ पर अग्रसर होअए लागल। नव जागरण जेना समस्त देशमे नवीन स्फूर्ति आनि देलक। लक्ष्मीधरक कल्पतरु सामाजिक जीवनक नवीन रूपरेखा अङ्कित कएलक जकर प्रभावसँ समस्त देशमे निबन्धक युग कए सए वर्ष धरि व्याप्त रहल। गङ्गेशक नव्यन्याय समस्त देशमे शास्त्रीय विचारकेँ एक गोट नव दिशा प्रदान कएलक। ई युग छल जखन विधर्मी मुसलमान भारतवर्षक विजय कए रहल छल ओ समस्त आर्यावर्त्त मुसलमानक शासनमे आबिओ गेल तथापि मिथिलामे कार्णाटक छत्रच्छायामे अपन राज्य रहल।

विद्यापतिक प्रादुर्भावसँ तीस चालीस वर्ष पूर्व मुसलमान मिथिलाक स्वतन्त्र राज्यकेँ अपन शासनमे लए लेल परन्तु एतए ओकर शासन चलि नहि सकलैक ओ जे मिथिला एतेक दिन क्षत्रियक शासनमे छल से आब विशुद्ध मिथिलाक एक गोट ब्राह्मणक हाथमे दए देल गेल यद्यपि ओ मुसलमानक अधीनता स्वीकार कए लेल, मुसलमान बादशाहकेँ कर देब स्वीकार कए लेल । ओइनिवारक राज्यकाल मिथिलाक इतिहासमे स्वर्णयुग कहल जाइत अछि जखन समस्त पूर्वोत्तर भारतक नेतृत्व मिथिला करैत रहल। १२०० ई०क प्रान्तमे जे नव जागरण मिथिलाक भूमि पर, नव स्फूर्ति ओ नव प्रेरणा अनलक से बहुत दिन धरि प्रवर्धमान रहल । वस्तुतः विद्यापतिक परोक्ष भेलाक अव्यवहित उत्तर कालमे भैरव सिंहक समयमे मिथिलाक उत्कर्ष चरम पर छल ओ पक्षधर मिश्रक शिरोमणि रघुनाथसँ शास्त्रार्थमे पराजय मिथिलाक गौरव सूर्यक मध्याह्नोत्तर पतनोन्मुखता द्योतित करैत अछि।

ओ विद्यापति एहि नव जागरणक सबसँ विशिष्ट प्रतिभाला प्रादुर्भूत भेल छलाह। मेधाक लोकोत्तर चमत्कारिता, कल्पनाक अद्भुत विलास, जीवनक प्रति घोर आस्था, कर्त्तव्यक प्रति अश्रान्त जागरूकता, ई सब तँ हिनक जीवनक प्रत्येक अंशमे लक्षित करितहिँ छी मुदा विद्यापतिक प्रतिभाक बहुमुखिता एकर स्पष्ट प्रमाण अछि। मानव-जीवनक उद्देश्य जे विद्यापति अपन पुरुष-परीक्षामे प्रतिपादित

कएल अछि से थिक तँ हमरालोकनिक संस्कृतिक सनातन मान्यता मुदा विद्यापति जाहि रूपमे ओकर निदर्शन कएल अछि ओ ताहूसँ बेसी जाहि रूपमे ओकर पालन अपना जीवनमे कएल अछि ताहिसँ स्पष्ट अछि जे भारतीय आर्य संस्कृतिमे जीवनक मूल्याङ्कन जाहि सनातन मापदण्डसँ होइत आएल अछि तकरहि ओ नव युगमे नव परिस्थितिमे पुनरुद्घोषित कएल, पुनरुज्जीवित कएल, नवीन मान्यता प्रदान कएल। स्मरण रहए जे मिथिलामे जातीय जीवन, जन जीवन, सामाजिक जीवनक रूपरेखा जे विद्यापतिक युगमे नियमित भेल छल से सनातन होइतहु नवीन युगक अनुकूल छल, एतेक अनुकूल छल जे ओ केवल मिथिलहिमे नहि, समस्त आर्यावर्त्तमे आदरसँ समादृत रहल ओ पूर्वोत्तर भारतमे तँ मैथिलक नेतृत्व सर्वमान्य रहल। आइ धरि हमर जीवन ओही भित्ति पर यथाकथञ्चित् अवलम्बित अछि ओ परिस्थितिमे अन्तरसँ ओहिमे समयानुकूल संशोधन, परिवर्त्तन ओ परिवर्द्धन नहि भेल अछि तहिँ समाज अस्तव्यस्त अछि तथा वैयक्तिक रूपसँ मैथिल लोकनि उन्नतिक शिखर पर क्रमशः पहुँचैत रहलाह अछि अवश्य परन्तु समष्टि रूपसँ मैथिल जाति पछुआएल, छिन्न भिन्न ओ नगण्य भेल अछि।

विद्यापतिक युगमे समाजक पुनः संघटनक जे क्रमबद्ध योजना बनि कार्यरूपमे परिणत कएल गेल जाहि प्रसादात् कमसँ कम तीन सए वर्ष धरि (१३००-१६००) ई समाज सुदृढ़

रहल एवं मुसलमान सदृश विधर्मी ओ विजाती विजेताक शासनमे अपन स्वरूपकें बचओने रहि सकल, ताहि संघटनक सबसँ महत्वपूर्ण, सबसँ विशेष स्थायी, सबसँ विशेष दूरदर्शितासँ पूर्ण घटना छल लोकभाषाक महत्व स्थापित करब, लोकभाषाक स्वरूप निर्धारित करब, लोकभाषाक घर घरमे प्रचार करब, ओहि लोकभाषाक जे आपामार जनता ताहि दिन बजैत छल, बुझैत छल, जाहिमे मिथिला देशक वासी सकल नर ओ नारी, ब्राह्मणसँ अन्त्यज धरि, राजासँ रङ्क धरि विद्वानसँ मूर्ख धरि समान रूपसँ आबद्ध भए सकैत छलाह, जाहि बलें समाजक सब वर्गमे एकत्व स्थापित भए सकैत छल, जकरा कारणें समस्त मिथिलावासी अपनाकें एक बूझि सकैत छलाह। ई विद्यापतिक प्रतिभाक प्रसाद छल, हुनक दूरदर्शिताक फल जाहिसँ मैथिलक जातीय जीवनक अभ्युदय होइत जँ विद्यापतिक दूरदर्शी नीतिक सर्वथा पालन होइत परन्तु से भेल नहि। विद्यापतिक परवर्ती युगमे जनभाषाक महत्व कमैत गेल ओ जन साहित्य क्रमशः वर्गीय होइत गेल जकर परिणाम भेल जे गत शताब्दी धरि अबैत अबैत मैथिली साहित्य ब्राह्मण ओ कायस्थ मात्रक साहित्य बुझल जाए लागल। विद्यापतिक दूरदर्शिता तँ एहीसँ सुस्पष्ट अछि जे छओ सए वर्ष पश्चात् एहि शताब्दीक प्रथम चरणक अन्त दिशि प्रथम महायुद्धक अनन्तर विश्वमे ई कथा सिद्धान्त रूपसँ मान्य भेल जे जातीय जीवनक आधार भाषा थिक ओ

भारतवर्षमे स्वातन्त्र्योत्तर कालमे भाषाधार प्रान्तक निर्माण दिशि ध्यान गेल। एखनहु जे हमरालोकनि मैथिल जातिक गप्प करैत छी किंवा मिथिलाक निवासीमे जातीयताक किछुओ चेतना अछि तँ तकर श्रेय विद्यापतिकें, जे मिथिलाक जनभाषाकें स्वरूपायित कएल। आबहु जँ मैथिलत्वक रक्षा भए सकैत अछि तँ मिथिलाक भाषाकें एकटा स्वरूप दए जकरा समस्त मिथिला देशवासी अपन भाषा बुझए, जकर गौरव सबकें होइक जकर विकासक हेतु, सम्मानक हेतु, पूर्णताक हेतु समस्त मिथिला निवासी कृतसंकल्प हो, किछुओ स्वार्थत्याग करए, थोड़ो सेवा करैत रहबाक सतत सचेष्ट रहए।

दोसर कथा अछि विद्याक प्रसङ्ग। मिथिला सब दिनसँ विद्याक व्यवसायमे संलग्न ओ विद्यापतिक युगमे समाजक पुनः संगठन भेल ताहिमे सामाजिक सत्ताक उपचयक निमित्त जातिक विशुद्धि-ओ आचारक वास्ताक संग संग विद्याक व्यवसायकें मान्यता देल गेल जकर परिणामस्वरूप विद्यापतिक युगमे मिथिलामे प्रकाण्ड पाण्डित्यक खानि छल। विद्यापति स्वयं एकगोट एहन महाकुलमे जन्म लेने छलाह जाहिमे पाण्डित्यक प्रकर्ष प्रख्यात छल, विद्याक उपासनासँ राजनीतिक अधिकार पओने छलाह। मुदा विद्यापति विद्याकें उचितसँ अधिक महत्व नहि देल। पुरुषक लक्षणमे पहिने वीरत्व, तखन सुबुद्धि ओ अन्तमे विद्याकें

राखि विद्यापति विद्याकेँ व्यापक रूपमे ग्रहण कएल अछि. विद्याक चौदह भेदक कथा कहि विद्यापति ओहिमे शास्त्र ओ शस्त्र एही दू विद्याकेँ मुख्यता देत छथि मुदा ताहुमे कहैत छथि जे स्वभावहिसँ शास्त्रविद्या शस्त्रविद्यासँ छोट थिक कारण शस्त्रसँ जखन राष्ट्र सुरक्षित रहत तखनहि ने शास्त्रक चिन्ता चलि सकत । स्मरण रहए जे चीनी आक्रमणक पश्चात् भारतवर्षमे अस्त्रशिक्षा प्रत्येक स्नातकक हेतु आवश्यक प्रतीत भेल । विद्यापतिक मतकेँ जँ मान्यता प्रदान कएल जाइत तँ मिथिलहिक किएक, भारतवर्षहुक इतिहास दोसर रूपक रहैत । एतेक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ छलाह विद्यापति, एतेक प्रबुद्ध, एतेक प्रगतिवादी तथापि जे लोक हुनका स्त्रैण कहैत छथि, सामन्तवादी से अपन अनभिज्ञता प्रदर्शित करैत छथि । पुरुषार्थक एहन एकान्त समर्थक, जातीयता कहू अथवा राष्ट्रीयता तकर मूलतत्त्वकेँ हृदयङ्गम कएने, सबसँ सुन्दर रीतिएँ, समयानुकूल मार्गक अवलम्बन कए ओकरा कार्यमे परिणत करबामे दक्ष: भारतवर्षमे थोड़ कवि एहन भेल छथि । विद्यापति केवल मैथिली भाषाक नहि, मैथिल राष्ट्रीयताक सेहो व्युत्पत्त्यर्थमे पिता थिकाह ।

विद्यापतिक प्रबुद्ध चेतना, समाजक कल्याण भावना एवं प्रखर दूरदर्शिता हुनक स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी नीतिसँ आओर सुस्पष्ट होइत अछि । ई तँ आब सर्वमान्य अछि जे कोनहु समाजक सांस्कृतिक अवस्थाक मापदण्ड होइत अछि

ओहि समाजमे स्त्रीक स्थान । विद्यापति-युगक महत्व ओहि युगमे स्त्रीगणक महत्तासँ, हुनकालोकनिक समाजमे जे उच्च स्थान छल ताहिसँ जाँचल जाए सकैत अछि । उदाहरणार्थ, स्त्रीधनक प्रसङ्ग मैथिल निबन्धकार लोकनि जे उदारता प्रदर्शित कएने छथि से भारतवर्षक आन कोनहु समाजमे नहि भेटत ओ ई निबन्धकार लोकनि विद्यापति-युगक देदीप्यमान विभूति छलाह । ओइनिवार वंशक महारानी लोकनि अनेकानेक कृतिमे अमर छथि । विश्वास देवी, धीरमती, लखिमा, अनुमति- अनेक नाम विद्यापति, वाचस्पति, मिसरू प्रभृति महापण्डितक ग्रन्थमे 'कारयित्री'क रूपमे वर्णित अछि । बङ्गालक सहजिया सम्प्रदायक भ्रमसँ शिवसिंहक पट्टराज्ञी लखिमा पर जे आरोप लगाओल जाए, मिथिलाक परम्परामे ओ परम विदुषी कवयित्री बुझल जाइत छथि । चण्डेश्वरक पत्नीक नाम सेहो प्राय: लखिमा छलैन्हि आ ओहो विदुषी छलीह । विद्यापतिक पुत्रवधू चन्द्रकला कवयित्री छलीह ओ रागतरङ्गिणीमे जे गीत लोचन उद्धृत कएल अछि से भ्रम हो, चन्द्रकलाक नहि होइन्हि, हुनक नामो चन्द्रकला नहि होइन्हि, मुदा विद्यापतिक पुतोहु गीत रचने छलीह, विदुषी छलीह, ई कथा लोचनकेँ ज्ञात छलैन्हि एहिमे विप्रतिपत्ति कोन ? विश्वासदेवीकेँ विद्यापति "पत्युः सिंहासनस्था" कहैत छथि; भगीरथपुरक शिलालेखमे भैरवसिंहक पुतोहु रानी अनुमतिकेँ "किञ्चोर्व्वीविनयाच्च यशसांनीता यया बान्धवाः" लखिमा शिवसिंहक हेतु पर्णनरदाहमे सती भेलीह परन्तु सती होएब

नारीक उत्कर्ष छल असाधारण धर्म नहि। पहुन नारी समाजक समुचित शिक्षाक निमित्त विद्यापति "पुरुष-परीक्षा" रचल "मुदे पौरस्त्रीणां" नागरी लोकनि संस्कृत सीखि सकथि तदुपयुक्त भाषामे, सरल ओ स्वच्छ संस्कृतमे, रोचक कथा सबसँ युक्त। ततबे नहि, विद्यापति ओहीठाम पौर-स्त्रीक विशेषणमे कहैत छथि–" मनसिज-कला-कौतुक जुषाम् " अर्थात् जाहि नागरी लोकनिकेँ काम-कला–विलासमे कुतुहल रहैत छैन्हि। एहि पदक व्यञ्जनामे हमरा विद्यापतिक समस्त कविताक उद्देश्य स्पष्ट भेटि जाइत अछि, पुरुष परीक्षाहिक काम-कथा अथवा आनहु प्रसङ्गक शृङ्गार-रसक कथाक नहि, प्रत्युत विद्यापतिक ओहि शतशः मैथिली गीतक जाहि प्रसादात् हुनक यश सर्वत्र धवलित अछि। सब प्रगतिशील युगमे काम-शिक्षा समाजक हेतु कल्याणकर मानल गेल अछि ओ हमर संस्कृतिमे तँ कामक स्थान जीवनक उद्देश्यमे धर्म ओ अर्थहिक सदृश अछि। जीवनक पूर्णताक हेतु कामक तृप्ति आवश्यक। तेँ ओकर उपेक्षा जीवनक पूर्णतामे बाधक होएत। विद्यापतिसँ एक सए वर्ष पूर्वहिँ कविशेखर ज्योतिरीश्वर संस्कृतमे पञ्चसायक लिखल परन्तु ताहिसँ केवल संस्कृतज्ञ उपकृत भए सकैत छलाह। काव्य "व्यवहार विदे" थिक ओ तेँ काव्यक द्वारा काम-शिक्षा भारतीय काव्य-परम्परामे प्रशस्त अछि। महाकाव्यमे तँ रतिवर्णन आवश्यक मानल गेल अछि। वीर-रस-प्रधान महाकाव्यहुमे, किरातार्जुनीय

अथवा शिशुपालवध समेतमे, एक एक सर्ग विशुद्ध रति-वर्णन अछि, कामशास्त्रक आधार पर तथा एहि परम्पराक आरम्भ कालिदास अपन कुमार सम्भवहिमे कएल, कारण, रघुवंशमे रतिवर्णनक सर्ग नहि अछि ने आदिकाव्य रामायणहिमे से अछि। हम तँ मानैत छी जे व्रजभाषामे शृङ्गारक गीतक रचना कए; कामशास्त्रक आधार पर; ओहि विषयक भिन्न भिन्न अङ्गक सरल ओ सुबोध भाषामे वर्णन कए कए विद्यापति ओहि समाजक हेतु कामशास्त्रीय शिक्षाक प्रचार कएल, जाहि समाजकेँ संस्कृतक अभिज्ञता नहि छलैक ओ मिथिलामे नारी-समाजमे संस्कृतक अभिज्ञता बड़ विरल नहि तँ परिमित, अत्यन्त सीमित छलैक। से छाड़ि ओहि उत्कट शृङ्गारक गीत-रचनाक की उद्देश्य भए सकैत छैक जाहिमे सखी-शिक्षा, प्रथम मिलन, विपरीत रति, मान ओ भिन्न भिन्न अभिसारक गीत अबैत अछि। जेना संस्कारक गीत ओहि ओहि संस्कारक इतिकर्त्तव्यताक अवगति करबैत आएल अछि ओ नारी-समाजमे व्यवहार-विषय पटुता प्रदान करैत आएल अछि तहिना शृङ्गार-विषयक गीत यौन-सम्बन्धक भिन्न भिन्न अंगक इतिकर्त्तव्यताक अवगति करबैत आएल अछि, नारी-समाजमे रति-विषयक पटुताक पाठ दैत आएल अछि। विद्यापति ई सब रचना मुख्यतः नारी-समाजक हेतु कएल, नारी-समाजमे ई गीत-सब आह्लादसँ प्रचरित होइत रहल, नारी समाजक कण्ठमे आइ धरि अमर रहल अछि। ई गीत-सब पुरुष-समाजकेँ

"स्त्रैण" बनएबाक हेतु नहि रचल गेल प्रत्युत नारीकें नागरी, सु नागरी बनएबाक लक्ष्य राखि रचल गेल "नागरिपन किछु कहया चाही" कहलहु बुझए सआनी" ओ विद्यापति कहैत छथि जे सुपहुकें "नागरी सुरत सुख अमिअ भेला"। इएह सुपुरुष ओ नागरिक अनन्त प्रेम-प्रसङ्ग विद्यापतिक गीतक विषय-वस्तु थिक। एही नागरीकें पुरुष परीक्षाक आदिमे मनसिजकलाकौतुकज्ञुषां कहल गेल अछि जकर शिक्षाक हेतु ओहि ग्रन्थक निर्माण भेल।

अतएव समाजक सुसंघटनाके सामूहिक जीवनक आधार मानैत, जनकल्याणक हितक एकान्त कामना करैत, तदनुरूप जीवनक पथ प्रशस्त करैत, विद्यापति मैथिल जातीय-ताक सूत्रपात करैत अपन सुदीर्घ जीवन वितओलाह परन्तु आरम्भहिसँ ओ चरित्रबल पर जोर दैत रहलाह, चरित्रबलहिसँ पुरुष पुरुष कहएबाक योग्य होइत अछि अन्यथा पुरुषाकार मात्र, पुच्छविहीन पशुमात्र थिक एकर उद्घोष करैत रहलाह। समाजमे यदि सब व्यक्ति अपन अपन चरित्र-बलकें रक्षामे पुरुष भेल तँ समाजक अभ्युदय स्वतः प्राप्त भए गेल ओ वस्तुतः पुरुष-परीक्षाक अनेकानेक कथासँ एही कथाक पुष्टि होइत अछि। गीतहुमे विद्यापतिक पुरुष नागरीक कामना करैत अछि, नागरी सुपुरुषक। जीवनक साफल्य ओ मानथि ओकर पूर्णतामे ओ तेँ केवल धर्म पर जोर नहि दैत छथि; अर्थ ओ कामकें ओ जीवनक पूर्णता ओ तेँ ओकर

साफल्यक हेतु आवश्यक बुझैत छथि। हँ, धर्मक विषयमे हुनक दृष्टिकोण उदार अछि; धर्मकें ओ जीवनक व्यवस्थित क्रम मानैत छथि तेँ अर्थ किंवा कामहु विषयक धर्म विरुद्ध आचरणकें प्रशंसित करैत रहैत छथि। परन्तु आश्चर्य लगैत अछि जखन देखैत छी जे पद पद पर विद्यापतिक युगमे समया-नुकूल मान्यताक विधान होइत रहल, नव नव आदर्श, नव नव मान्यतासँ समाजमे नव जीवनक क्रमक प्रचार होइत अछि मुदा ओकरा पूर्वक क्रमसँ उच्छिन्न कए नहि, पूर्वक क्रमकें आधार बनाए, जाहिसँ परम्परामे कोनो आघात नहि होइत अछि अथ च नियमन एहन उपयुक्त होइत अछि जे लोककें ओकर पालनमे ने असौकर्य, ने ओकरपालमे प्राचीन परम्परासँ विच्छेद, ने पूर्वजक प्रति अनास्था, ने भावीक प्रगतिक मार्गमे अवरोध। कोन आश्चर्य जे आइ धरि ओ मर्यादा यथाकथञ्चित् अनुवर्त्तमान अछि ओ मैथिल जे मैथिल चीन्हल जाइत छथि से सब ओही लक्षणसँ जाहि लक्षणक नियमन विद्यापति युगक महामनीषीगण कए गेल छथि।

इएह छल ओ स्वर्ण-युग जाहिमे विद्यापति प्रादुर्भूत भेलाह ओ अपन प्रतिभासँ ओकरा अमर बनाए गेलाह। अत्यन्त खेदक विषय थिक जे हमरालोकनि अपन इतिहास बिसरि गेल छी, ओकर अवगति प्राप्त करबासँ विमुख छी। अपन इतिहासक उपेक्षा ओहि जातिक सांस्कृतिक ह्रास द्योतित करैत अछि। इएह कारण थिक जे व्यक्तिगत रूपसँ हमरालोकनि उन्नतिक शिखर पर पहुँचितहुँ छी तथापि

समष्टि रूपेँ, सामाजिक दृष्टिसँ, जातीय भावनामे हमरा लोकनि नगण्य छी। यदि हमरालोकनि अपन अतीतक दिशि साकांक्ष होएब, पाछाँ ताकब तँ आश्चर्य होएत जे शाके १०१६ सँ लए प्रायः चारि सए वर्ष सँ ऊपर धरि शाके १४५० धरि मिथिला सब दृष्टिएँ समुन्नत छल, प्रबुद्ध छल, प्रगतिशील छल, ओ एहि स्वर्णयुगमे सबसँ प्रदीप्त, सबसँ प्रखर, सबसँ उन्मुख प्रतिभा छल विद्यापतिक। समयक, देशक, समाजक ओ कुलक मर्यादाक पालन करैत ओ अद्भुत दूरदर्शितासँ समाजकेँ उन्नयनक पथ पर आगाँ लए जाइत रहलाह मुदा मिथिलाक दुर्भाग्य जे ओही समयमे मिथिलाक गौरव-सूर्य अस्तोन्मुख भए गेल। विद्यापतिक प्रदर्शित मार्गक महत्व लोककेँ क्रमशः अनचिन्हार होअए लगलैक। आब जखन विद्यापतिक महिमा पुनः लोक बुझए लागल अछि, तखन विद्यापतिक पुनर्मूल्याङ्कन होएबाक चाही, हुनक उदात्त आदर्श स्थापित होएबाक चाही, हुनक व्यक्तित्वक चारूकात जे कालजन्य एकटा जाल जकाँ पसरि हुनक स्वरूपकेँ चिन्हए नहि दैत अछि तकरा हटएबाक चाही। से जँ करए लागब तँ ओहि युगहुक परिचय प्राप्त करए पड़त। ई एतेक सुगम काज नहि अछि। एहि हेतु एक दल उत्साही नवयुवक चिन्तन भक्ति ओ स्नेहसँ लागथि तखनहि ओकर उद्धार भए सकैत अछि मुदा से सर्वथा विधेय थिक ओ से जखन होएत तखन हमरालोकनि अपन जातीय गौरव चीन्हि सकब आ तखनहि विद्यापतिक महिमा चीन्हि सकबैन्हि।

श्री रामचन्द्र झा

पूर्णियाँ

पूछू नहि हमरा सँ जे की नाम छी।
कोशी गाबि रहल हमरे जय-गीत अछि,
गंगा जनइत हमरा हृदयक प्रीत अछि,
और महानंदाक विमल जलधारमे
प्रतिबिंबित सन हमर विराट अतीत अछि।
रोपि रहल जे धान निहुड़ि कए खेतमे
ओहि किसान-कन्याक ललाटक घाम छी।
हम निर्जनमे अधफुलैल वनफूल छी।
शस्य-श्याम छी, माटिक रस सँ स्नात छी।
कोका-वनमे मुसकाइत मधु-प्रात छी।
जइ पर किछु-किछु चढ़ल जवानीक रंग छइ।
से बसातसँ कँपइत कदली-पात छी।
कोबरमे भ' गेल मधुर से भूल छी।
हम निर्जनमे अधफुलैल वनफूल छी।
ओसबिंदुसँ भीजल कमलक गंध हम।
अमा-दीप छी, पूर्णिमाक अभिसार छी।
सासुरसँ आयल दधि-माछक भार छी।
जन्मभूमिकेँ छोड़ि एला परदेश जे
हुनकर प्राणप्रियाक स्वप्न साकार छी।
विद्यापतिक कलमसँ उतरल छंद हम।
ओसबिंदुसँ भीजल कमलक गंध हम।

—डा० बद्रीनारायण दास

विद्यापतिक देशभक्ति

महाकवि विद्यापतिक सम्बन्धमे बहुतो महत्वपूर्ण विषय सभ अन्वेषण कएल गेल अछि ओ कएल जा रहल अछि तथा बहुतो रूपसँ हुनक प्रतिभा ओ महत्व पर प्रकाश देल गेल अछि। किन्तु हमरा जनैत जे साधारण सँ साधारण जनताकेँ सिखबा योग्य हुनका जीवन ओ कृतिसँ उपदेश छैक से छैक हुनक मातृभूमि मिथिलाक भक्ति।

हुनक जतेक कृति अछि ताहिमे स्थान स्थान पर ओ इएह निवेदन करैत छथि जे ओ मैथिल छथि, मिथिलाक बड़ मर्य्यादा छल तथा अद्यावधि वर्त्तमान छैक, हुनका ओकर भाषा ओ इतिहाससँ बड़ स्नेह छन्हि। सभसँ पहिने इएह तथ्य पर विचार करू जे ओ साहित्यक रचना करब आरम्भ कएलन्हि तखन स्पष्ट घोषणा कएलन्हि जे संस्कृत ओ प्राकृत सँ वेसी "सब जन मिट्ठा" हुनक "देसिल बअना" छन्हि तेँ ओहीमे अपन साहित्यिक रचना ओ करब निश्चय कएलन्हि। ततबे नहि ओ बारम्बार मिथिलाक राजा लोकनिक नाम लैत अपना काव्य सभक रचना कएलन्हि। एतय धरि जे कीर्त्तिलता, कीर्त्तिपताका तथा पुरुषपरीक्षामे यत्र तत्र मिथिलाक इतिहासेकेँ प्रधानता देलन्हि।

पुरुषपरीक्षामे कवि लिखैत छथि-"अहो तीरभुक्तीयाः स्वभावाद् गुणगर्विणो भवन्ति"। अवश्य ई मैथिलक विशेष

स्वभाव छल से ओ बुझैत छलाह जे गुणी भेलेँ मैथिल ककरो मनुक्ख नहि कहैत छथि। कीर्त्तिपताकामे सेहो एहिना गौरवोक्ति कयिक अछि। ओ कहैत छथि—"तिरहुति मज्जादा वहि रहिअ"।

विद्यापतिक पद जे सभसँ अधिक सफल भेल तकर नाम मिथिले देशक नामेँ "तिरहुति" नाम प्रसिद्ध भेल। ई विषय की हुनक देशभक्तिक परिचायक कम अछि?

आजुक युगमे मैथिलीक अभ्युत्थान करबाक काल हमरा सभक कर्त्तव्य भय जाइछ जे हुनक एहि देशभक्तिक स्मरण करी तथा ताही रूपेँ मातृभूमि मिथिला वा तिरहुत केर भक्त बनी, ओकर इतिहास, भाषा ओ गुण केर गौरव राखी एवं जाहिसँ ओहि महापुरुष द्वारा उठाओल "देसिल बअना" "सबजन मिट्ठा" भेल अछि तकरा सार्थक करी।

ई हर्षक विषय थिक जे हमरालोकनि हुनक "जय-जय भैरवि असुर भयाउनि" नामक दुर्गाक स्तुतिकेँ मैथिली-भक्तिक प्रतीक बनाय सभ सभा सोसाइटीक आरम्भमे गबैत छी तथा उठि कए ठाढ़ भए ओहि भक्ति-गीतकेँ अपन प्रान्तक "राष्ट्रगीत" बूझि सम्मान प्रदान करैत छी। सन् १९६२ ई०मे दिल्लीमे जखन मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीक उद्घाटन पण्डित जमाहिरलाल कएलन्हि तखन ओहो एहि गीतकेँ मिथिला वन्दना बूझि उठि ठाढ़ भए सभक संग सम्मान प्रदान कय-लन्हि। गोसाउनिक गीत गाबि प्रत्येक शुभ कार्य मिथिलामे

प्रारम्भ कएल जाइछ ई तँ प्राचीन परम्परा थिक तथा तकरे पालन हम सभ एहि रूपेँ करैत छी। कवि जखन दुर्गाकेँ कहैत छथि :—

"विद्यापति कवि तुअ पद सेवक
पुत्र बिसरू जनु माता॥" तखन बूझि पड़ैत अछि जे हमरा सभक दिसिसँ कवि मातृभूमि मिथिलाकेँ कहि रहल छथि जे "हे माता हमरा जुनि बिसरू॥" आशा अछि विद्यापति जयन्तीक पुनीत पर्वक अवसर पर समवेत सभ केओ मातृभूमिसँ इएह आशीर्वाद माङि हुनके सेवा करैत आगाँ बढ़ब।

डा० जयकान्त मिश्र

प्राचीन मैथलीक स्वरूप आओर विद्यापति

प्राचीन भाषा मध्य मैथिलीक अप्पन एकटा विशिष्ट स्थान छैक। मिथिलाक भौगोलिक क्षेत्रक अन्तर्गत रह-निहार मानव-मात्रक मनोभावकेँ व्यक्त करबाक क्षमता जाहि भाषाकेँ छैक सैह मैथिलीक भाषाक नामसँ विख्यात भेल अछि। समस्त प्रान्तीय भाषाक मध्य मैथिलीक स्थान अग्रगण्य अछि। जाहि समयमे प्रान्तीय भाषा समहिक विकासो नहि भेल छल, ताहिसँ पूर्वहिसँ मैथिलीमे साहित्य सृजनक प्रारंभ भऽचुकल छल आर ओकर अनेकानेक प्रमाण हमरा लोकनिक समक्ष अछुआन अछि। मिथिला अति प्राचीन कालसँ संस्कृत अध्ययन अध्यापनक प्रधान केन्द्र छल आर प्राचीन संस्कृत साहित्यमे मैथिली शब्दक प्रयोग अहि बातक सबूत अछि जे ओ लोकनि अपन भाषाक अवहेलना नञ् कएने छलाह। भाषाक प्रचलित परिपाटीसँ ओ लोकनि कथमपि अनभिज्ञ नञ् छलाह। संस्कृत-प्राकृत अपभ्रंशक पछाति मैथिलियेटा एहेन भाषा अछि जे सर्वप्रथम साहित्यिक भाषाक रूपमे ग्रहण कैल गेल आर एखनहु एकर प्रभाव समस्त पूर्वी भाषा पर देखल जाइछ। अपन सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परम्पराक चलते एकर स्वतंत्र स्तित्व सुरक्षित रहल। जहाँ नवम्-दशम् शताब्दीमे संस्कृत मन्थ

मध्य मैथिली शब्दक व्यवहार भेटइत अछि तहाँ तेरहम-चौदहम शताब्दी मध्य मैथिलीमे परिमार्जित गद्यक उदाहरण सेहो।

षष्ठम शताब्दीसँ दशम शताब्दी धरि जे पूर्वी भारत मे प्राकृतक अपभ्रंश रूपक प्रचार-प्रसार भेल तकर परिणति भेल प्रान्तीय भाषाक उत्पत्ति आ विकासमे। प्रान्तीय भाषाक विकसित भेला उत्तरो अपभ्रंशमे साहित्यक रचना होइते रहल आर एकर प्रमाण हमरा मिथिलहुमे भेटइत अछि। अपभ्रंशक कवि लोकनि प्रत्यक्ष अनुभूत एवं लौकिक जीवनसँ सम्बन्धित घटनाक वर्णन करइत छलाह आर हुनका लोकनिक काव्यमे ग्राम्य-जीवनक विशेष महत्व छल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर कैकटा भाषाक वर्णन कएने छथि जाहिमे 'अवहट्ठ' क उल्लेख सेहो अछि। विद्यापति मैथिलीकेँ 'अवहट्ठ' आर 'देसिल बअना' कहने छथि। कीर्तिलताक भाषाकेँ चौदहम शताब्दीक मैथिली अपभ्रंश कहल गेल अछि जे संस्कृत-प्राकृतसँ भिन्न अछि। मैथिलीकेँ पूर्वी अपभ्रंशक अवदान सेहो कहल गेल अछि। अपभ्रंश मिथिलामे अवहट्ठक नामसँ सेहो प्रचलित छल। कीर्ति-लता, कीर्तिपताका, प्राकृत पैंगलम् आदि ग्रंथ केँ अपभ्रंशक ग्रंथ मानल गेल अछि। पश्चिमी प्रान्तमे जे पिंगलक नामसँ प्रख्यात छल सैह पूर्वी प्रान्त मे अवहट्ठ मैथिलीक नामसँ विख्यात भेल। प्राकृत पैंगलमक टीकाकार वंशीधर पिंगलके अवहट्ठक एक रूप मानैत छथि। अपभ्रंश मे महा-

काव्यक परम्परा छल आर एकर प्रणेता छलाह महाकवि स्वयंभू जे 'पउम्म चरिउ' क रचयिता छलाह। 'पउम्म चरिउ' आर विद्यापतिक भाषामे साम्य देखबा मे अबइए। लोचन विद्यापतिकेँ मैथिली अपभ्रंशक अगुआ कहने छथि आर उएह विचार महामहोपाध्याय मुकुन्द झा बक्सीक सेहो छन्हि। मैथिली अपभ्रंशक प्राञ्जल परम्परा अति प्राचीनकालसँ अवश्ये रहल होइत किएक तँ हम देखइत छी जे विद्यापति अपन उपहासक प्रसंगमे निम्न-लिखित वाक्यसँ ओकर उत्तर दइत छथि—

"बालचन्द विज्जावई भासा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चय नाअर मन मोहइ"—

मैथिलीक प्राचीन रूपसँ हमरा लोकनिकेँ सिद्धा-चार्यक रचनामे साक्षात्कार होइत अछि आर संगहि तत्का-लीन संस्कृत साहित्यमे मैथिली शब्दक प्रयोगसँ सेहो (जेना-वाचस्पति मिश्र आर सर्वानन्दक रचना सबमे)। अपन सुकुमारता, प्राचीनता एवं माधुर्यक प्रतापेँ मैथिली दिनानु-दिन गौरवान्वित होइत गेल आर एका पर एक प्रान्तमे पस-रइत गेल। बंगला आर असमिया सँ कोनो प्रकारेँ मैथिलीसँ उऋण नहियेँ भ' सकइये। कतेको असमक विद्वान लोकनि असमिया के मैथिलीक अंग मनइत छथि। चर्यापद मे

आठो कारक जाहि रूपे प्रयुक्त भेल अछि ठीक ओहि रूपमे हम ओकर प्रयोग विद्यापतिमे देखइत छी आर ओहु आधार पर हम मैथिलीक प्राचीनताक स्वरूप निश्चित क सकइत छी। तेरहम शताब्दीक सिद्ध कवि विनयश्रीक पद्यक समता तत्कालीन मैथिलीसँ स्पष्ट अछि। सिद्ध कविक भाषा आर वर्णरत्नाकरक भाषामे जे साम्य अछि ताहुसँ स्पष्ट कहल जा सकइत अछि जे भाषाक रूपमे मैथिलीक विकास ओहिसँ किछु शताब्दी पूर्वहि भेल होइत। कर्णाट शासक नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवक एक मैथिली कविताक संकलन स्वर्गीय शिवपूजन सहायजी कयने छथि आर जँ अहि काव्यकेँ मल्लदेवक काव्य मानिलेल जाए तँ निर्विवाद-रूपेँ कहल जा सकइयै जे बारहम शताब्दीमे मैथिली काव्य पूर्णता प्राप्त क चुकल छल। हम स्वयं अहि मल्लदेवकेँ नान्यदेवक पुत्र मनइत छी कारण अहिठाम भनितामे नृप मल्ल-देव अछि आर अहि नामसँ ओ भीठ भगवानपुर अभिलेखमे सेहो सम्बोधित कैल गेल छथि। प्राकृत पैंगलमे सेहो मैथिलीक विशिष्ट काव्य उपलब्ध अछि आर ओहिमे तीन-चारि सौ एहेन मैथिली शब्द अछि जकर व्यवहार अहुखन अछि। मैथिलीक मुक्तक पद एवं छन्द ग्रन्थक दृष्टिकोणसँ ई एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ अछि। पारिजातहरण नाटकमे यद्यपि संस्कृत-प्राकृतक व्यवहार भेल अछि तथापि ओहिमे मैथिलीमे जे गीत अछि से मैथिलीक प्राचीनताक परिचायक कहल जा-

सकइत अछि। ओहि गीत सबमे उपमा-उपमेयक समन्वय अपूर्व अछि।

बारहम शताब्दी क 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' मे तत्कालीन भाषा शब्दक जे प्रयोग देखबामे अबइयै ताहुसँ ई स्पष्ट ज्ञात होइछ जे मैथिली शब्दावली काफी विकसित भ चुकल छल। वर्णनरत्नाकरसँ तत्कालीन काव्यरुढ़ि एवं काव्यरूपकाँ भास होइछ। वर्णनरत्नाकर एवं कीर्तिलतामे तत्सम शब्दक प्रयोग देखबामे अबइयै। विद्यापति पद्यमे अपभ्रंशक तद्भव आर गद्यमे तत्समक प्रयोग करइत छथि। पदावलीमे तत्सम शब्दक प्रयोग प्रचूर मात्रामे भेल अछि। विद्यापति लोकभाषा एवं अपभ्रंश दुहुमे रचना कैलन्हि आर तत्कालीन प्रचलित पद्धतिकेँ अपनौलन्हि। कीर्तिलतामे ओ अपभ्रंशक प्रचलित परम्पराक निर्वाह कैलन्हि मुदा भाषामे ओ एहेन परिष्कृत रूपक परिचय देलन्हि जकर दोसर उदाहरण भेटब असम्भव। हुनक अवहट्ट रचना सभहिक मध्य सेहो मैथिलीक सम्मिश्रण देखबामे अबइयै। मैथिली स्वर विन्यास एवं वर्ण विन्यासक प्रभाव तँ सहजहि स्पष्ट अछि। प्राकृत पैंगलक रचयिता एवं विद्यापतिक प्रयाससँ अपभ्रंश देसिल बअनाक स्तर पर उतरबैडा नहि कैल अपितु लोक प्रवाहसँ अभिषिक्त भए एक नवीन भाषाक जन्म देलक जाहिसँ जनमानस आन्दोलित भए उठल। ज्योतिरीश्वर आर विद्यापतिक योगदान अहिमे अपूर्व कहल जैत।

सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्पराक फलेँ मैथिलीक सुव्यवस्थित रूपेँ विकास भेल आर ओहि मैथिली केँ विद्यापतिक भाषा चमत्कृत कएदेलक। धुरन्धर विद्वान रहितहुँ ओ छलाह मात्र एक उत्कृष्ट कवि जिनक उपमा आर अलंकार कविकेँ सह-जहि आत्मसात् क' लइत अछि। सामन्ती समाजमे रहितहुँ ओ अपन काव्य प्रतिभाक दुरुपयोग नहि केलन्हि आर इएह अछि हुनक सर्वश्रेष्ठ विशिष्टता। अपन चमत्कारिक ढंगसँ रिझैवाक क्रममे ओ जे काव्य लिखलन्हि ताहिमे अलंकारक प्रचुर मात्रामे प्रयोग भेल अछि। कविता केँ सजेवामे ओ जतेक सचेष्ट एवं सजग छथि ततेक आन नहिं। जन मानसक कण्ठहार बनि विद्यापति एहेन साहित्यिक परम्पराक जन्म देलन्हि जे अहुखन जीवित अछि आर हमरा लोकनिकेँ अनु-प्राणित कए रहल अछि।

सामन्तवादी व्यवस्थामे रहितहुँ ओ नवीन जन-जागरणक कवि छलाह। दरबारमे रहितहुँ एवं राजनैतिक संक्रमण कालक चक्रसँ आवेष्टित होइतहुँ ओ शुद्ध रूपेँ एक जन कवि छलाह जे राधाकृष्ण एवं शिवक माध्यमसँ सामान्य जनताक दुख-सुखक चित्रण केलन्हि। सामाजिक यथार्थसँ ओ कहियो कन्नी नहि कटौलन्हि अपितु ओ ओहि तथ्यकेँ बुझलन्हि आर तदनुरुप काज केलन्हि। लोकतत्वक परिग्रहण कए महाकवि विद्यापति लोक चेतनाक प्रतिनिधित्व केलन्हि। जँ से नहि ओ केने रहितथि तँ लोक कोना हुनका अपना कण्ठमे स्मरण

करइत रहइत आर उऔह लोककंठ अधुना हमरा ओहि महा-कविक गीत देलक जाहि पर मात्र हम मैथिलेटा नहिं वरन् समस्त साहित्य प्रेमी हर्षित छी। ओहि जन-मानसमे विद्यापति अहुखन ओहिना जीवित छथि आर हुनके माध्यमसँ जीवित अछि मैथिली भाषा।

प्राचार्य राधाकृष्ण चौधरी

विद्यापतिक काव्यमे पुरुष-परिकल्पना

भारतीय इतिहासक मध्ययुगमे मुसलमानी धर्म सिंधु-कूलसँ गंगाक कछारधरि आबिगेल छल, बौद्धधर्म अपन जन्मभूमि भारतवर्षसँ अपन जड़ि उखाड़ि सुदुर पूर्वमे धराशायी भए चुकल छल, पराजित हिन्दू जाति तत्कालिक शक्ति नगण्य बुझि मन्दिरक शरण लेलक। भारतीय सामंती समाजकेँ मुसलमानी सामंती समाजक विलासिता आ आडम्बर आच्छादित कए लेलक तथा एहिठामक जन-जीवन अस्त-व्यस्त भए एकगोट महान्दोलनक तैयारी कए रहल छल। विभिन्न वादमे विभक्त होइतहुँ ई अपन समन्वयात्मक प्रवृत्तिक कारण विश्वक एक पैघ पुनर्जागरण प्रमाणित भेल। ऐहि ठामक भाषा संस्कृत धर्मशास्त्रक चुरुकमे आबद्ध भए कूपजल भए रहल छल आ 'देसिल बयना सबजन मिट्ठा' प्रमाणित भए रहल छल। विद्यापति भारतीय इतिहासक एहने संक्रान्तिकालमे परस्पर विरोधी विचार धाराक मिलन-विन्दु पर आसनस्थ छथि। परस्पर विरोधी प्रवृतिक सम्मिलनक कारणेँ हिनक व्यक्तित्व जतबे विवादस्पद अछि। कृतित्वसँ ओ ओतबे श्रद्धास्पद छथि।

विद्यापतिकेँ सिद्धि इतिहास, भूगोल, स्मृति धर्मशास्त्र पुराण, पत्रलेखन कथा ओ नाटक लिखबामे भने भेटल छलन्हि किन्तु प्रसिद्धि भेटल मैथिली गीतक कारणेँ। प्रायः

कहल जाइत अछि जे विद्यापति सौंदर्योपासक कवि छलाह, शृंगारिक छलाह जनिकर सौंदर्य सम्बन्धी दृष्टिकोण रूप आ अपरूपक मध्य विन्दु पर स्थिर छल। विद्यापतिक शृंगारिक गीतमे पुरुषक विभिन्न रूपक चर्चा भेल अछि। कवि 'सुपुरुष' सुपुहु 'सुनागर' आदि रूपेँ पुरुषक उल्लेख कएने छथि। हुनका दृष्टिएँ सुपुरुषस प्रेम उचित थिक आ कुपुरुष अथवा दुर्जनसँ प्रेम अनुचित। तेँ ई आवश्यक बुझना जाइत अछि जे महाकवि पुरुषक विषयमे अपन काव्य मध्य जे परिकल्पना कएने छथि तकर आधार की अछि। ताहि पर विचार कएल जाए।

भारतीय काव्यशास्त्रानुसार नायक नेता, विनीत, मधुर, त्यागी, दक्ष, प्रियंवद, लोकप्रिय, प्रख्यात, कुलीन स्थिर एवं कलावान् कहल गेल अछि। ओ बुद्धि, उत्साह, प्रभा, स्मृति आदिक समृद्धि सँ समन्वित तथा शूर, दृढ़, तेजस्वी, शास्त्र दृष्टिसँ युक्त एवं धार्मिक होइत छथि। आचार्य विश्वनाथक साहित्य दर्पणमे नायकक गुणक चर्चा एहि रूपेँ भेल अछि :—

त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्त लोकस्तेजोवैदग्ध्यशीलवान्नेता ॥[1]

नायक त्याग भावनासँ भरल, महान कार्यक कर्त्ता, उच्चकुलोद्भव, बुद्धिवैभवसँ सम्पन्न, रूप यौवन एवं उत्साहक सम्पदासँ युक्त, निरन्तर उद्योगशील, जनताक स्नेहभाजन ओ तेजस्विता, चतुरता किंवा सुशीलताक निदर्शक हो।

1. सा० द० ५०३ श्लोक ३०

हिन्दी कवि मतिराम नायकक लक्षण प्रस्तुत करैत कहैत छथि—

तरुण सुवन सुन्दर सुकुल कामकला परवीन।
नायक यौं मतिराम कहि कवित गीत रसकीन॥[२]

उपर्युक्त लक्षणक आधार पर नायकक भिन्न-भिन्न भेद कएल गेल अछि। नाटकीय दृष्टिकोणसँ नायकक धीरोदात्त, धीरप्रशान्त, धीरललित एवं धीरोद्धत ई चारि भेद कएल गेल अछि। काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ नायकक पति उपपति एवं वैशिक ई तीन भेद अछि जाहिमे पतिक पुनः अनुकूल, दक्षिण, धृष्ट एवं शठ ई भेद नायिकाक प्रति हुनक व्यवहारक आधार पर कएल गेल अछि। काव्यशास्त्र मे नायकक सात्त्विक गुणक चर्चा सेहो भेल अछि। नायकक सात्त्विक गुण अछि— शोभा, विलास, माधुर्य, गांभीर्य, धैर्य, तेज, ललित एवं औदार्य।[३] कहबाक अभिप्राय जे नायकमे धीरता, कुशलता, सत्यवादिता, सत्याचरण; महान उत्साह अनुरागिता, छोट पर दया आ पैघक संग प्रतिस्पर्द्धा ओकर दृष्टिमे धीरता, चालिमे विचित्रता, बोलचालमे मन्द-हासक छटा, मनः क्षोभ रहलहु मनक सुस्थिरता ओ शान्तिः भय, क्रोध, शोक आदिमे आकृति पर निर्विकारिता, कर्तव्य-

२. रसराज।
३. सा० द० ३०१ श्लोक ३०।

निश्चय मे दृढ़ता, आक्षेप नहि सहब, दानशीलता, सम-दर्शिता आदि गुणक सम्यक् समावेश रहब सात्त्विक गुण थीक।

महाकवि विद्यापतिक दृष्टिमे सेहो नायकक उत्तम-गुण सभ छलैन्हि आ अपन कविता मे ओ कतेको ठाम 'सुपुरुषक' उल्लेख कएने छथि। 'पुरुष' ककरा कही एहि प्रश्न पर महाकवि 'पुरुष परीक्षा' मे विचार कएने छथि। पुरुष परीक्षा बालक ओ नागरिक लोकनिक लेल लिखल गेल। हितोपदेश ओ पंचतन्त्र सँ पुरुष परीक्षा मे ई अन्तर अछि जे ओ सभ कोमलमति बालक लोकनिक हेतु छल मुदा ई – शिशूनांसिद्धयर्थं नयपरिचितैर्नूतनधियां।
मुदे पौर स्त्रीणाम्मनसिजकला कौतुकजुषाम्॥

राजा पारावार ओ सुबुद्धिक प्रश्नोत्तर सँ कथाक आरम्भ होइत अछि। कन्या पद्मावतीक हेतु वर चाही। सुबुद्धि विचार देलथिन्ह जे पुरुष सँ विवाह करबियौक। कारण,

धीरः सुधीः सविद्यश्च पुरुषः पुरुषार्थवान्।
तदन्ये पुरुषाकाराः पशवः पुच्छवर्जिता॥[४]

तात्पर्य जे धीर, सुधी, सविद्य आ पुरुषार्थवानक अतिरिक्त पुरुषाकार होइतहु पुरुष नहि, पशु थिक। उदाहरण-प्रत्युदाहरण दए पुरुषक विभिन्न रूपक चर्चा एहि मे भेल

४ पुरुष परीक्षा

अछि। तहिना अपन कीर्त्तिलता मे सेहो महाकवि 'पुरुष' पर विचार कैने छथि। कयौ पुरुषावस्थहुकहि पुरुष कहा सकैत अछि, जन्ममात्रहि केओ पुरुष नहि होइत अछि। जल देनहि मेघ जलद थिक ओना धुआँक ढेरी जलद नहि थिक —

पुरिसत्तणेन पुरिसओ नहि पुरिसओ जम्म मत्तेन।
जलदानेनहु जलओ नहु जलओ पुञ्जिओ धूमो॥[५]

ओ पुरुषक परिभाषा दैत कहैत छथि जे पुरुष वएह थिकाह जे कीर्त्ति कें प्राप्त कैलक अछि, युद्ध में शूर अछि, जकर हृदय धर्मपरायण छैक, विपद् कर्म मे जे दीनताक वचन नहि बाजए, स्वभावहि जे प्रसन्न रहए, जकर सम्पत्ति सुजन भोग करए, गुप्त रूपें द्रव्य अर्थात् दान दए जे ओकरा बिसरि जाए एवं जे पूर्ण बलिष्ठ होथि—

'कित्ति लज्ज, सूर सङ्गाम, धम्म-पराअणहिअअ, विपअकम्म-
नहु दीन जम्पइ,
सहजभाव सानन्द, सुअन भुंजइ जासु संपइ, रहसें दव्व-
विस्सरइ सत्तु सकअ सरीर,
एतै लक्खणे लक्खिअइ पुरुष पसंसओ वीर।[६]

पुरुषक उपर्युक्त विशेषता सभनायकक सात्त्विक गुणक स्मरण दिआ दैत अछि। महाकवि विद्यापति कें जीवन

५ कीर्त्तिलता, पहिल पल्लव, डा० उमेश मिश्र, पृ० ६
६ ऐजन, पृ० ५

ओ जगतक बहुतवेशी अनुभव छल, सामाजिक उत्तरदायित्वक पूर्ण परिज्ञान छल। तें महाकवि जहिना अपन 'पुरुष परीक्षा' ओ कीर्त्तिलता मे पुरुषक ध्यान रखलन्हि अछि, तहिना पदावली में सेहो 'सुपुरुषक' उल्लेख कएने छथि। ओना पदावली मे पुरुषक जे भिन्न-भिन्न रूप आयल अछि, तकर सबहक यदि विवेचन कएल जाए तें निबन्धक कलेवर बड़ पैघ भए जाएत, तें हम पदावली मे प्रयुक्त 'सुपुरुष' धरि अपना कें सीमित रखैत छी। ओना विद्यापतिक काव्य मे पुरुषक जे भिन्न-भिन्न रूप प्रदर्शित अछि, ओ फराक अध्ययनक विषय थिक।

विद्यापति अपन पदावली मे 'सुपुरुषक' जे उल्लेख कएने छथि से काम सूत्रक 'नागरिक' मात्र नहि थिकाह। महाकवि 'सुपुरुषक' लक्षण द्वारा तत्कालीन अस्तव्यस्त हिन्दू समाजमे एक प्रकारक आदर्शक स्थापना कैलन्हि। आब प्रश्न ई अछि जे महाकविक दृष्टिमे सुपुरुषक लक्षण की? यदि पदावलीक अध्ययन करब तें पता चलत जे सुपुरुषक निम्नलिखित लक्षण ओ विशेषता थिक— जहिना चन्द्रमाक कला दिनानुदिन विकसित होइत अछि तहिना सुपुरुषक प्रेम नित्य वर्द्धमान थिक।[७] सुपुरुषक वचन

७ (i) दिन दिन बाढ़ए सुपुरुष नेहा। अनुदिने जैसन चान्दक रेहा॥
(नेपाल पदावली, पद-५१ मित्र मजुमदार-४५५)
(ii) सुपुरुष पेम कबहु नहि छाड़। दिने दिने चान्दकला जनु बाढ़॥
(मित्र मजुमदार पदावली, पद-३१५)
(iii) सुपुरुषक पेम सुभावहि अनुराग। दिन दिन बाढ़ अधिक दिन लाग॥
(मित्र मजुमदार पदावली, पद-७)

पाथरक रेखा थिक। ओ कोनो परिस्थितिमे टरि नहि सकैत अछि। जहिना हाथसँ पाथर पर उगल रेखाकेँ मेटाओल नहि जा सकैत अछि, तहिना सुपुरुषक वचन झूठ नहि भए सकैछ, बदलि नहि सकैछ।[8] सुपुरुषक महत्व वेद सदृश अछि कारण भगवाने ओकर महत्व बूझैत छथि।[9] ओ जनैत छथि जे कोन समय की बाजी आ जे बाजी तकर पालन करी।[10] हुनक वचन मधुर होइत अछि, हृदय कोमल होइत अछि आ ककरो हृदय पर हुनक वाणी आघात नहि पहुँचबैत अछि।[11]

---

८ (i) पिया गुनगाहक तेँ गुण गेह। सुपुरुष वचन पखानक रेह॥
(मित्र मजुमदार पद०-३१३ नै०-८०)
(ii) हे सखि पुरुष करहि परमान। (मित्र मजु-पद १६४
(iii) सुजन वचन दरन नेहा। हाथ न मेटए पखानक रेहा॥
(ऐमन पद-३६५)
(iv) सुपुरुष वचन पखानक रेह। (ऐ० पद-४४५)
(v) सुपुरुष बाचा सुरहु सिनेह। कबहुन विचल पखानक रेह॥
(ऐ० पद० ५५७, नेपाल पद० ११६)
(vi) गुरु सुमेरु सह सुपुरुष बोल। (ऐ० पद-१४३)
९ सुपुरुष भाखा वेमुख भेद। एक दिन बुझल अबहु नहि भेद॥
(नै० पद-६५)
१० सुपुरुष वचन सगे वेवहार। खसे खरिआ दए बीचहि खार॥
(मि० मजु० पद-३६६)
११ (i) सुपुरुष वचन कोटि न लाग। जनि दिन कडु आलग दाग॥
(नै० पद-६१)
(ii) हृदय कुसुम सम मधुरिम वानी। निश्चर अएलाहु तुअ सुपुरुष जानी॥
(मित्र मजु० पद-४०५ नेपाल-१४२)
(iii) वचन अमियसन मन अनुमानि। निश्चर अएलाहु तुअ सुपुरुष जानि॥
(मित्र मजु० पद ४१२, ४१३)

हुनक प्रेमक अन्त नहि होइत अछि।[12] हुनक प्रेम पवित्र होइत अछि, वर्ण सदृशत चमकैत रहैछ।[13] नारी हृदय प कोन तरहेँ विजय प्राप्त कएल जा सकैत अछि, से ओ जनैत छथि। हुनक प्रेम शुद्ध ओ मधुर होइत अछि।[14] ओ अपन व्यवस्था नहि छोड़ि सकैत छथि।[15] सुपुरुषक प्रेम लुब्ध भ्रमर अथवा बान्हल हरिण सदृश होइत अछि जे पुनः पुनः स्वतंत्र भेलहुँ पर ओतहि रहैत छथि।[16] एक दिशि यदि नवोनिधि आ स्वर्ण अछि तँ ओही सदृश सुपुरुषक प्रेम थिक।[17] सुपुरुष प्रेम करबामे पात्र पर, अपन प्रेयसी पर

---

१२ (i) सुपुरुष पेम जीवरह ओर। (ऐ० पद० ४३२)
(ii) सुपुरुष सिनेह अनु नहि नहि होए। (ऐ० पद ४६०)
(iii सुपुरुष न करे निदान रे (ऐ० पद ४६५-४६७)
(iv) सुपुरुष सँ नेह विद्यापति कह।
ओल धरि हो निरबाहे। (ऐ० पद ४७५)
(v) सुपुरुष सिनेह अन्त नहि होए। (ऐ० पद ४७१)
१३ (i) सुपुरुष पेम हेम अनुमानी (नै० पद ६५)
(ii) कसिअ कसौटी चिन्हिअ हेम।
प्रकृति परेखिअ सुपुरुष पेम॥ (मित्र मजुमदार पद-२८१, नै० २२)
१४ (i) मालती मधु मधुकर कर पान।
सुपुरुष ओही गुनक निधान॥ (ऐ० ११२, मित्र० मजु० ४२३)
१५ (i) उत्तमजन बेबथा छाड़ए निअ बेथा चूक।
कैसे कएबे मुँह देखावए पैसि पताएल कूप॥ (नेपाली पद-२४)
१६ लुबुधल भमरा कि बेध श्याम।
बान्हल हरिण कि छाड़ए ठाम॥ (ऐ० पद-११)
१७ एक दिशि मनिमय नव निधि हेम।
अओका दिसि नवरस सुपुरुष पेम (मित्र मजु०-५७५)

पूर्ण ध्यान रखैत छथि कारण हुनका स्वर्ण ओ लोहक अन्तरक पूर्ण ज्ञान रहैत छन्हि ।[18] सम्पत्तिक नाश भेलहुँ सुपुरुष विवेक भ्रष्ट नहि होइत छथि अर्थात् सम्पत्ति नष्ट भेला पर अपन प्रिय पात्रक प्रति प्रेम भावनामे कनेको कसरि नहि करैत छथि, अपन वचनक हुनका स्मरण रहैत छैन्हि, अपन प्रतिज्ञा (Commitment) सँ ओ पाछू नहि हटैत छथि ।[19] सुपुरुष धीर होइत छथि आ कतबो सङ्कट पड़ला पर विचलित नहि होइत छथि आने सुखक समय अएला पर ओ उद्विग्नमन होइत छथि ।

ओ गीताक 'स्थितधीक' सदृश होइतहुँ 'वीतराग' नहि होइत छथि । जकरा अंगीकार करैत छथि तकर पालन अपन धर्म बुझैत छथि ।[20] हुनक वाक्य आ कथन हाथीक दाँत सदृश होइत अछि जकरा घुकाएब ओ नहि जनैत छथि ।[21] सुपुरुष केहनो अवस्थामे धीर बनल रहैत छथि । भर्तृहरि धीर पुरुषक लक्षण लिखैत कहैत छथि :—

---

१८ जगत कतन छथ दुर्जन कत न लाबए पेम ।
सुपुरुष विरेचल बोलिअ जे विन्दु आएल हेम ॥ (नेपाल पद-१६)

१९ वैभव गेले रहे विवेक,
तैसन पुरुष लाख महँ एक ॥ (मित्र मजु० पद-४६४)

२० अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।

२१ हाथीक दसन पुरुष वचन कउने बाहर होय,
ओ नहि घुकए वचन घुकए कतो करो कोए ॥
(नेपाल पद ७ मि० मजु० पद ४६२)

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे,
वा न्याय्यात पथं प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।[22]

अथवा गीताक :—

सम्भावितस्य चाकीर्तिमरणादति रिच्यते ।[23]

तहिना सुपुरुष सेहो होइत छथि । कायर व्यक्ति जखन विपत्तिमे मरि जाइत अछि, सुपुरुष अवसाद कें अंगीकार करैत छथि ।[24] सुपुरुष अपन क्रोध नहि प्रकट करैत छथि ।[25] ओ परदुःखकातर होइत छथि ।[26] सुपुरुषक वचन प्रारंभ सँ अन्तधरि एक सदृश होइत अछि आ दुर्जनक वचनक पता विनु परिणामे नहि भेटैछ ।[27] सुपुरुषक वचन ओहिना स्थिर

---

२२ भर्तृहरि नीतिशतक ।

२३ गीता ।

२४ (i) कायर पुरुष हृदय हारिमए, सुपुरुष सह अवसाद लो ।
कत न जीवन संकट परए, कत न मीलए नीधि ।
उत्तम तैअओ सत न छाड़ए, मल मन्थ कर औधि ॥
(नेपाल पद-१२, मित्र० मजु० ५०)
(ii) सएह पुरुषवर जेहे धैरजधर, सम्पति विपतिक ठानली
(मित्र० मजु० पद-५०)

२५ सुपुरुष भए नहि करिअ रोष । बड़ भए कपटी इ बड़ दोष ॥
(ऐ० पद-३६२)

२६ करए कृपा बड़ पर दुख देखि । (ऐ० पद०-१४)

२७ दुरजन वचन न सह सब ठामा । बुझए न रहए जाने परिनाम ॥
(ऐ० पद-१२६)

रहैत अछि जेना चन्द्रमामे हरिणक चिह्न श्रो अपन वचनक निर्वाह करैत छथि श्रा अन्यत्रहु रहला पर हुनक प्रेम कम नहि होइत अछि।

सुपुरुषकें यदि 'सुनारि' 'सुनागरि' भेटि गेल तँ समाजक लेल ई एक गोट बड़ पैघ प्रसन्नताक विषय थिक कारण एहि प्रकारक मिलन स्वर्णकें सुगंधि प्रदान करैत अछि। किन्तु बहुतो तेहन नारी छथि जे अमित ऐहन वचनमे भुला जाइत छथि श्रा तखन हुनक जीवन जे संकटापन्न श्रा अवसादपूर्ण, वेदना विगलित श्रा अश्रुमय होइत अछि, पुरुषाकार व्यक्ति सुपुरुष होएबाक जे स्वांग करैत छथि तकर जे दुष्परिणाम होइत अछि, ताहू पर महाकवि अनेकानेक गीत लिखने छथि। नारीक वेदना श्रो परितापक श्रो गाथा पदावलीक कतेक गीतमे भेटत।

महाकविक गीत सभमे जे सुपुरुषक लक्षण भेटैत अछि ताहि आधार पर ई कहल जा सकैत अछि जे सुपुरुषमे विवेक, मधुरता, वचन पालनक क्षमता, स्थिरता, विश्वसनीयता, लगनशीलता, ईमानदारी, सच्चाई, धैर्य, गांभीर्य, रूप, यौवन, उदारता, परदुःखकातरता, दानशीलता, हृदयक कोमलता आदि रहक चाही।

—प्रो० बालगोविन्द झा 'व्यथित'

कलकत्ता विश्वविद्यालय में

मैथिलीक स्थान कोना ?

आइ सँ पचास-एकावन वर्ष पूर्व जाहि समय में बिहार प्रान्तक मैथिली भाषा-भाषी लोकनिक विश्वविद्यालयक उच्चतम कक्षाक कोन कथा जे निम्नतम प्राथमिककक्षा में मैथिली पठन-पाठनक कल्पनो नहि कयने छलाह, संभावनाक सपनो नहि देखने छलाह ताहि समय सन १९१७-१९१८ ई०मे सुदूर बंगालस्थित कलकत्ता विश्वविद्यालयक उपकुलपति महामहिम सर आशुतोष मुखर्जी निम्नतम कक्षा सँ उच्चतम एम० ए० कक्षाधरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था करौलन्हि, जाहि हेतुक प्रत्येक मैथिली भाषा-भाषी हुनक चिर कृतज्ञ एवं आभारी रहत।

सन १९१७-१८ ई०मे कलकत्ता उच्च न्यायालयक भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा कलकत्ता विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति सर आशुतोष मुखर्जीक विचार छलन्हि जे भारत-वर्षक विभिन्न क्षेत्रीय भाषाक प्रोन्नति प्रचार श्रो प्रसारक हेतु एम० ए० कक्षाधरि पठन-पाठनक व्यवस्था होयब आवश्यक

थीक, तैं हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयालम, मराठी उड़िया, उर्दू, पोश्तू प्रभृति चौदह भाषाक पाठ्य-क्रमक व्यवस्था विश्वविद्यालय में करबाक निर्णय लेलन्हि ओ तत्कालीन गवर्नर (जे विश्वविद्यालयक कुलपति छलाह) सँ एतदर्थ अर्थ व्यवस्थाक स्वीकृति प्राप्त करैत ओकर आवन्टनो भिन्न-भिन्न भाषाक हेतुए कए देलथिन्ह। परन्तु दुर्भाग्यवश मैथिलीक नाम ओहि सूची मे सम्मिलित नहि कएल गेल छल।

ओहि समय मे बिहारक भूतपूर्व मंत्री श्री हरिनाथ मिश्र* जीक पिता श्री बबुआ जी मिश्र (बिहारक दरभंगा जिलान्तर्गत कोइलख ग्राम निवासी) कलकत्ता विश्वविद्यालय मेएस्ट्रोनोमी (ज्योतिषशास्त्र)क प्राध्यापक छलाह जे हमर परम मित्र छलाह ओ हम दुहु गोटैं पूर्णियाक श्रीनगर ड्योढ़ीक कलकत्ता स्थित कोठीक एकै कोठलीमे रहैत छलहुँ। गप्पक क्रम मे ओ हमरा कहलन्हि— "बड़ दुःखक विषय जे विश्वविद्यालयमे चौदह भाषाक एम० ए० कक्षाधरि पाठनक व्यवस्था भेल मुदा मैथली कें स्थान नहि देल गेल।"

ई सुनि हम हुनका सँग लए श्रीमान् आशुतोष मुखर्जीक ओहि ठाम गेलहुँ। ई उल्लिखित करबा मे अप्रासंगिक नहि होयत जे शुभ लग्न मे भेंट भेने सर अशुतोष मुखर्जीक हमरा पर विद्यार्थी जीवनहि सं असीम अनुकंपा रहैत छलन्हि तथा हमरा पुत्रवत् स्नेह करैत छलाह। इएह कारण छल जे बंगाल गवर्नमेन्टक ट्रान्सलेटरक अस्थाई पद सं हमरा पदत्याग कराए विश्व-

* सम्प्रति अध्यक्ष, बिहार विधान सभा।

विद्यालयक पोस्ट ग्रेजुएट कक्षा मे हिन्दी पढ़यबाक हेतु पद-स्थापित कएलन्हि। हमरा सं ओ वार्तालाप स्नेहवश सभ दिन बंगला भाषा मे करैत छलाह तैं ओही भाषा मे हम कहलियैन्ह— "सर ए की कल्लेन ! मैथिली बांगलार मध्ये एतऽ सान्निध्य ओ सामञ्जस्य जे किछु दिन पर्यन्तऽ विद्यापति ठाकुर मैथिली कवि छिलेन कि बांगलार कवि छिलेन, एनिये भयानक वाद-विवाद छिलो। जस्टिस शारदाचरण मित्र जखन दरभंगाय गिये बिस्फी ग्रामेर अवलोकन कल्लेन तथा पंजीकार ओ तत्रस्थ विशिष्ट लोकेर संगे वार्तालाप कल्लेन तबे गिये तिनी विद्यापति के मैथिलीर कवि बोले स्वीकार करिलेन। इति पूर्वे विद्यापति बांगलार कवि बोले बांगला देशे विख्यात छिलेन, एतइ बुझा जाय जे बांगलार साहित्य ओ मैथिली साहित्येर कतो समता, कतो सादृश्य आछे। ता छोड़ा ताल पत्रे लिखित प्राचीन बांगला अक्षर ओ मिथिला आधुनिक अक्षरेर संगे कोनो भेद नाय। किन्तु एम० ए० कक्षार पठन पाठनेर परिकल्पना ते आपनी मैथिली के कोनो स्थान ना दिए, एके बारइ बाद दिये दिलेन्ह ए बड़ दुःखेर विषय"।

अहि पर ओ कहलन्हि—"ठीकइत ! ए तो भयानक भूल हये छे किन्तु एखन तं स्वीकृत समस्त टाका बिलो (आवन्टन) हये गिये छे आर एइ बच्छरे मैथिली होवार कोनो उपाय नइ, तबे यदि आपनी अढ़ाइ हजार टाकार तीन दिनेर मध्ये योगाड़ करे दितेपारेन तबे आमी आगामी कौन्सिल मिटींगे मैथिली के

कोनो गतिते दवा ते पार थो। ता छाड़ा एइ बच्छरे आर उपाय नाय।"

यद्यपि ई सुनि हम एतेक शीघ्रता मे ओतेक टाका जुटा सकबाक असंभावना सँ खिन्न होइत बासा लौटलहुँ तथापि साहस पुरःसर अपन कर्त्तव्य सँ विमुख नहि होइत रजौड़ाधीस राजा श्री टंक नाथ चौधरी सँ (जे कि ओहि समय मे कालीघाट मे छलाह) भेंट कए सभ विषय सँ हुनका अवगत करबैत अढ़ाइ हजार टाका एतदर्थ दान देबाक हेतु निवेदन कएलियैन्ह। परन्तु ओ कहलन्हि जे पाछाँ बुझि कए हम कहब। (प्रायः हुनका हमर कथा पर विश्वास तखन नहि भेलैन्हि)। समय कम छल हम ई सुनि आनो ठाम प्रयत्न करब उचित एवं आवश्यक बुझल। हम तत्क्षण श्रीनगराधीश राजा श्री कालिकानन्द सिंह कें तार देलियैन्ह जे हम महत्वपूर्ण कार्यक हेतु पूर्णिया आबिरहल छी, तँ हमरा पूर्णिया जंकशन मे कोनो सवारी पठा देल जाय ओ दार्जिलिंग मेल सँ पूर्णिया हेतु संध्या काल विदा भेलहुँ। प्रातः पूर्णिया जंकशन पर हुनका स्वयं मोटर लए उपस्थित देखलियैन्ह। बहुत कृतज्ञ भेलहुँ आ हुनका सभ वार्ता कहलियैन्ह तथा हुनक संगे श्रीनगर होइत चम्पानगर गेलहुँ। ओतय राजा बहादुर कीर्त्यानन्द सिंह कें सभ विषय सँ अवगत करौलियैन्ह। ओ, ई सभ सुनि बड़ प्रसन्न होइत बजलाह—"अढ़ाइ हजार टाका की देबेक ! देबे करबेक तऽ साढ़े सात हजार टाका दिम्रीक। ई कहि साढ़े सात हजार टाकाक चेक हमरा नामे देलन्हि ओ एक टेलीग्राम सर आशुतोष मुखर्जी कें देलथिन्ह जे साढ़े

सात हजार टाकाक चेक हम श्री व्रजमोहन ठाकुर द्वारा एम०ए० मे मैथिली चेअरक स्थापना हेतु पठा रहल छी तथा एकर नाम —'बनैली मैथिली चेअर' राखल जाय। एहन सुसंयोग जे श्री जानकी महारानीक कृपा सँ जाहि काल मे विश्वविद्यालय कौन्सिलक एहि विषयक अंतिम मीटिंग कलकत्ता मे होइत छलैक ओही समय सर आशुतोष मुखर्जी कें ई टेलीग्राम भेटलन्हि, जकर परिणामस्वरूप कलकत्ता विश्वविद्यालय मे एम० ए० कक्षा पर्यन्त मैथिलीक पाठ्यक्रम स्वीकृत कएल गेल।

जखन हम पुनः लौटि कए कलकत्ता पहुँचलहुँ तखन ज्ञात भेल जे श्री राजा टंकनाथ चौधरी सेहो उदारता पूर्वक साढ़े तीन हजार टाका देबाक सूचना सर मुखर्जी कें देलथिन्ह तथा टंकनाथ मैथिली चेअर निर्माण करबाक अनुरोध कयलथिन्ह। एहि तरहेँ एगारह हजार टाका तत्कालिक कार्यक हेतु संग्रहीत भए गेल।

जखन सर मुखर्जी सँ भेंट भेल तऽ कहलन्हि—"की करे एतो टाका योगार करते पाइलेन' हम कहलियन्हि—"आपनार नाम बिक्री करे" (ताहि पर ओ ठहाका दए हँसलाह) ओ कहलन्हि जे—"आर एखन बोएर योगार करुन ओ दु टी मैथिली प्रोफेसर, ऐक टी संस्कृत नोइंग आर एकटी इंगलिस नोइंग प्रोफेसरेर नियुक्तिर व्यवस्था करुन"।

एतदर्थ विश्वविद्यालयक खर्च पर पुस्तक तथा प्राध्यापकक चयन हेतु दरभंगा आदि स्थान जएबाक हमरा आग्रह कएलन्हिओ एक पत्र महाराजाधिराज सर रामेश्वर सिंहक

नामें देलन्हि। महाराजाधिराज ओहि समय कलकत्ते में छलाह तँ ओतहि हुनका सँ भेंट कए पत्र देलियन्हि। ओ बड़ प्रसन्न भेलाह तथा विद्यापतिक एक गीतो पढ़ि बजलाह जे ई केहन ललित अछि आ संगहि राज लाइब्रेरी सँ मुद्रित तथा हस्त लिखित पुस्तक सँ सहायता करबाक आश्वासन देलन्हि।

परन्तु जखन हम दरभंगा पहुँचलहुँ तखन एकर प्रतिकूल हुनका अन्य मनस्क पाओल। पाछाँ ज्ञात भेल जे बनैलीक नामें मैथिलीक चेअर भए गेल से जानि ओ असन्तुष्ट छलाह। ओहि ठाम एकटा घटना आओरो घटल। तरौनी निवासी महा महोपाध्याय पं० परमेश्वर झा ओहि समय में दरभंगा राज लाइब्रेरीक पुस्तकाध्यक्ष तथा द्वारपंडित सेहो छलाह एवं 'मिथिला तत्व विमर्श' नामक हुनक धारावाहिक आख्यान मैथिली भाषा में प्रकाशित होइत छलन्हि। हम हुनकँहि संस्कृत निष्ठ मैथिली प्राध्यापकक हेतु चयन कएल तथा तत्काल डेढ़ सय टाका मास एवं छ मासक बाद दुइसय टाका मास आ तत्पश्चात् एक वर्षक उपरान्त गवर्नमेन्टक निश्चित वेतनमान भेटबाक वचन देलियन्हि। ओहि समय हुनका मात्र पचीस टाका तथा उपाति (भोजनार्थ अशिद्ध अन्न) राज सँ भेटैत छलन्हि। पंडित जी सहर्ष कलकत्ता जयबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह। मुदा महाराजाधिराज सँ अनुमति लेब आवश्यक बुझि हुनका सँ निवेदन कयलथिन्हि। महाराजाधिराज पहिनहि सँ असन्तुष्ट छलाहे, ई सुनि क्रुद्ध भऽ पंडित जी सँ पुछलथिन्हि—'संप्रति

कतेक टाका मासिक वेतन ओतय भेटत' तँ पंडित जी उत्तर देलथिन्हि—'डेढ़ सय टाका। ताहि पर महाराजाधिराज कहल थिन्हि—डेढ़ सय टाका मे खाइत-पीबैत घरक भाड़ा काटि साठि टाका सँ बेसी नहि बाँचत। आइ सँ साठि टाका मासिक वेतन अहाँ कें अहीठाम भेटत तें अहाँ कलकत्ता जुनि जाइ।

एतबे नहि, आवेश में आबि महाराजाधिराज हमर विरुद्ध सर आशुतोष मुखर्जी कें एक तारो देलथिन्ह जे पं० श्री ब्रजमोहन ठाकुर एतय आबि हमर द्वार पंडित परमेश्वर झा कें फुसिया कए लए जेबाक प्रयास करैत छलाह। ई बात हमरा पाछाँ कलकत्ता पहुँचलाक पश्चात् श्रीमान् महामहिम आशु बाबू सँ ज्ञात भेल। ओ एहि सँ हमरा पर क्रुद्ध नहि भेलाह अपितु हास्य करैत बजैत भेलाह—"की रकम आपनार महाराजा, दारभंगार दारपंडित महा महोपाध्याय श्री परमेश्वर झा? को कँ चो छेले जे ता के ता को आपनो फुसलिये कलकत्तार विश्व-विद्यालये आनते चेये छिलेन" आ ई कहि ओ भभाकय हँसैत भेलाह।

महाराजाधिराजक वचन सँ पंडित जी कें 'किंकर्तव्य विमूढ़' देखि हम कहलियैन्ह जे अपने एतहि रहल जाय तथा एक लेखक हम नियुक्त कऽ दैत छी जे राज लाइब्रेरी सँ पुस्तक सभक नकल उतारि कलकत्ता पठाबैत रहताह। एतदर्थ अपनेक सहानुभूति अपेक्षित अछि। पंडितजीक सहयोग हमरा भेटल तथा तीस टाका मासिक वेतन पर एक लेखक नियुक्त कएल। ओतय सँ विदा भऽ मधुबनी पहुँचलहुँ। मिथिला प्रेस मे डेरा

दए मिथिला मिहिर पत्र मे विज्ञापनक माध्यम सँ मैथिली भाषा-भाषी लोकनि कें आग्रह तथा अनुरोध कएलियन्हि जे जिनका ओहिठाम मैथिली साहित्यक मुद्रित-अमुद्रित हस्तलिखित पुस्तक, गीत आदि हो से देथि अथवा नकल करबाक सुविधा प्रदान कऽ एहि कार्य मे सहयोग देथि। संगहि दुइटा प्राध्यापक पदक हेतु आह्वान सेहो कऽ देने छलियैक। एहि तरहें दरभंगा मंडलान्तर्गत यत्र-तत्र सुदूर गाम मे घुमैत-फिरैत मैथिली साहित्यक सामग्री एकत्रित कएल जाहिमे श्री लालदास सँ मैथिली मे 'उत्तर राम चरित' तथा लोहना कॉलेजक आचार्य श्री तेजनाथ ठाकुर (जे कि हमर पित्ती छलाह) सँ 'गणेश जन्म' भेटल। हम जे मैथिली साहित्यक सामग्री एकत्रित कएल ताहि मे कवि कोकिल विद्यापतिक एकटा 'पदावली' कवीश्वर चंदा झा कृत मैथिली रामायण डाक्टर ग्रिअरसनक मैथिली ग्रामर ओ उमापतिक 'पारिजात हरण' आदि मुख्य छल। एतदतिरिक्त कतेको हस्तलिखित पुस्तक गीत आदि भेटल छल जकर नाम एतेक दिन बितला सन्तां स्मरण मे नहि अबैत अछि।

तकर पश्चात् काशी गेलहुं जतय 'मिथिला मोद'क संपादक श्याम सीधऊ (दरभंगा) निवासी म० म० पं० मुरलीधर झा सँ भेंट कएल। ओ सभ समाचार सुनि अति प्रसन्न भेलाह तथा तावत् पर्यन्त 'मिथिला मोद' पत्रिकाक प्रकाशित सभ अंक हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करैत उल्लास पूर्वक देलन्हि जाहि सँ कि पाछां मैथिली पाठ्य नियमावली (सिलेबस) प्रस्तुत करबामे

बहुतो सहायता भेटल। तदुपरान्त गजहरा (दरभंगा) निवासी म० म० पं० जयदेव मिश्र सँ संपर्क स्थापित कएल तथा हुनका सँ बहुत प्रकारक सहायता भेटल। संगहि धनकौल (मुजफ्फरपुर) निवासी स्वर्णपदक विभूषित पं० मुक्तिनाथ झा ज्योतिषाचार्य जे ओहि समय काशीमे छलाह (जे कि पूर्णियाँक वर्त्तमान अपर समाहर्त्ता पं० श्री शुभंकर झाक पिता रहथिन्ह) सँ भेंट कएल ओ हुनकासँ बहुतो हस्त लिखित लेख सम्बन्धी सूचना भेटल। हुनके सङ्ग काशीनरेशक ड्योढ़ी रामनगर जाय पण्डित जीवन झा सँ 'सुन्दर संयोग' नामक मैथिली नाटक उपलब्ध कएल। तत् पश्चात् काशी सँ इलाहाबाद जा कऽ म० म० डा० श्री गङ्गानाथ झा सँ भेंट कएलहुं तथा हुनक निर्देशानुसार हुनक ग्राम पाहीटोल (दरभङ्गा) पहुँचि हुनक भ्राता श्री गणनाथ बाबू सँ भेंट कएल तथा हुनक पारिवारिक हस्तलिखित अमुद्रित मैथिली गीत सभक संग्रह कएल।

एहि प्रकारें मैथिली भाषाक मुद्रित आओर हस्तलिखित पुस्तक तथा गीत आदि संग्रहित करैत पचही ड्योढ़ीक मिथिला राज कुल भूषण श्री तुलापति सिंहक भातिज श्री गङ्गापति सिंहकें अंग्रेजी निष्ठ मैथिलीक प्राध्यापकक हेतु चयन कऽ अपन सङ्ग हुनका लऽ कऽ कलकत्ता पहुँचलहुँ आ हुनका महामहिम आशुबाबू सँ परिचय कराओल तथा संग्रहीत मुद्रित तथा हस्तलिखित पुस्तक लेख आदि सभ देखौलियन्हि।

एहि सभसँ ओ बहुत प्रसन्न भेलाह तथा मैथिली पाठ्यक्रमक हेतु मुख्य (प्रिन्सिपल) तथा गौण (सबसिडियरी) दुनु तरहक

विद्यार्थीक हेतुक नियमावली (सिलेबस) प्रस्तुत करबाक भार हमरहि देलन्हि ।

तत्पश्चात् कोइलख (दरभङ्गा) निवासी प्रगाढ़ पन्डित श्री खुद्दी झा कें संस्कृत निष्ठ मैथिली प्राध्यापक पद पर आसीन कराओल गेल ।

एवम् प्रकारें कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राथमिक (प्राइमरी) कक्षा सँ स्नातकोत्तर (एम० ए०) कक्षा धरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था सम्पन्न भेल ।

तदुपरान्त बङ्गालक तऽ कतेको व्यक्ति ओ बिहारक दरभङ्गा, मुंगेर, भागलपुरक अनेकों व्यक्ति तथा पूर्णियांक श्री केदार चौधरी वकील तथा परवाहा (पूर्णियां) निवासी श्री माधव मिश्र सेहो मैथिली मैं एम० ए० कएलन्हि ।

एहि सम्बन्ध में म० म० डा० उमेश मिश्रक सुयोग्य बालक डा० श्री जयकान्त मिश्र हमरा पत्र देने छलाह जे कलकत्ता विश्वविद्यालय में मैथिलीक समावेश कोना भेल से लिखल जाय, जाहि सं कि हम अपन प्रस्तावित पुस्तक में ओकर सन्निवेश करी ।

परन्तु, कर्त्तव्य बुद्धि सं कएल गेल अपन ई कार्यक प्रोपगंडा (प्रचार) करब इष्ट नहि छल, तें हम हुनका पत्रोत्तर नहि देलियैन्ह ।

किन्तु जखन मुख्य न्यायाधीश श्री सतीशचन्द्र मिश्र महोदयक अध्यक्षता में पूर्णिया में हमर अनुपस्थिति में श्री बाबू देवनाथ राय प्रभृति द्वारा आयोजित मैथिली साहित्यक गोष्ठी

में एक पूर्णिया निवासी वक्ता जे कि मैथिली स्थापनाक द्दु वर्षक बाद मैथिली लऽ एम० ए० उत्तीर्ण भेल छलाह अपन वाह-वाही लुटबा लेल मिथ्या भाषण देलन्हि जे 'बिरला बन्धु सँ बारह हजार टाका संग्रह कए उएह व्यक्ति कलकत्ता विश्व-विद्यालय में मैथिलीक समावेश करओलन्हि। ई सुनि हमरा बहुत आश्चर्य एवं क्षोभ भेल जे यथार्थ में जाहि व्यक्तिक आर्थिक सहायता सँ कलकत्ता विश्वविद्यालय में मैथिलीक समावेश भेल ताहि व्यक्तिक नामक चर्चा तक नहि कएल गेल। किन्तु जे व्यक्ति एको कैंचाक सहायता नहि कएलन्हि तथा जनिका मैथिली भाषा सँ कोनो संपर्क नहि तनिक अर्थात् विड़लाबन्धु नामक ढोलहो पीटल गेल ।

वास्तविकता तऽ ई अछि जे उक्त वक्ता महोदय स्वयं अनभिज्ञ छथि जे किनक किनक आर्थिक सहायता ओ कोन-कोन प्रकारें किनक-किनक सत्प्रयास एवं सुप्रयत्न-सँ ई कार्य सु-संपन्न भेल ।

एहि प्रकारक मिथ्या भाषण द्वारा वक्ता महोदय अपना कैं तऽ हास्यास्पद कएबे कएलन्हि, संगहि आर्थिक दान देनिहार राजा लोकनिक प्रति समस्त मैथिली भाषा-भाषी कैं भ्रामक स्थिति में राखि अकृतज्ञ बनेबाक दुष्प्रयत्न कएलन्हि ।

एहन परिस्थिति मे आब हमर चुप रहब आर्थिक दान देनिहार उक्त राजा लोकनिक तथा अन्यान्य साहाय्य कर्त्ता लोकनिक प्रति चिर कृतज्ञताक स्थान पर परम कृतघ्नताक सूचक होइत ।

इएह् कारण भेल जे एतेक दिन अर्थात् ५०-५१ वर्षक बाद आइ मैथिली भाषा-भाषीक समक्ष ई विषय सविस्तार प्रकाशित कए देब आवश्यक नहि प्रत्युत् अनिवार्य बुझना गेल जाहि सँ उक्त वक्ता द्वारा उत्पन्न कएल भ्रमक निराकरण भए जाय तथा मैथिल समाज यथार्थ वस्तु-स्थिति सँ अवगत भए जाथि ।

एहि उद्देश्य सँ पूर्णियाक विद्यापति पर्वक सुअवसर पर अपन कर्त्तव्यक दृष्टिएँ ई वार्ता संस्मरणक रूप मे अर्पित कएल ।

पं० श्री व्रजमोहन ठाक्कुरः
एम० ए० बी० एल०
अवकाश प्राप्त वकील पूर्णिया
एवं
कलकत्ता विश्वविद्यालय
पोस्ट ग्रेजुएट कौन्सिलक
भूतपूर्व सदस्य ।

पूर्णिया ओ मैथिली

सम्प्रति पूर्णियाँ जिलाक क्षेत्रफल ४२०० वर्गमीलक लगभग अछि । लगभग ८०० वर्गमील १९५६ ई० मे कटिकऽ वङ्गालमे मिलि गेल । १७२८ ई० मे पूर्णियाँक रकवा ५००० वर्गमीलसँ किछु अधिक छल । वर्त्तमान कारी कोशीक पश्चिम परगना धर्मपुर सरकार मुङ्गेरमे छल तथा दरभङ्गा महाराजक जमीन्दारी छल । १७३२ ई०मे पूर्णियाँक नवाब सेफ खाँ ओहि भूभागकेँ पूर्णियाँमे मिलाए लेल तथा दरभङ्गाक महाराज राघव सिंह परगना धर्मपुरक जमीन्दार बनल रहलाह । ताहि दिनक पूर्णियाँ तीन सरकारमे बाँटल छल—सरकार पूर्णियाँ, सरकार ताजपुर तथा सरकार मुङ्गेर । काबुलक वायसराय उमेदुल मुल्क अमीर खाँक प्रपौत्र सेफ खाँ रहथि तथा अत्यन्त सम्मानित राजपुरुष छलाह । हुनक समयमे पूर्णियाँ धन-धान्यसँ पूर्ण छल । हिनक मृत्युक बाद सैयद अहमद खाँ पूर्णियाँक फौजदार वा सैनिक प्रशासक भेलाह । ई वङ्गालक नवाब अलीवर्दी खाँक जामाता छलाह एवं अपन मृत्यु पर्यन्त पूर्णियाँक शासन कएलैन्हि । हिनक मृत्यु १७५६ ई०मे भेल । हिनकहु शासनकालमे पूर्णियाँ समृद्धिशाली छल ।

सेरुल मुताखरीनक लेखक गुलाम हुसेन खाँ तँ मुक्तकंठसँ हिनक शासनक प्रशंसा कएल अछि। हिनक तोपखाना बड़ उन्नत छल ओ जकर कमान्डरक नाम छल लाली। ओही लालीक नामे एखनहुँ पूर्णियाँ नगरमे स्थित रामबागक समीप ललाइ छावनी महल्ला अछि। सैयद अहमद खाँक मृत्युक पश्चात् हुनक पुत्र शौकत जङ्ग पूर्णियाँक सैनिक प्रशासक भेलाह। ई किछुए दिन शासन कएल। हिनका अपन मसियौत भाए सिराजुद्दौलासँ, जे अलीवर्दी खाँक मृत्युक पश्चात् बङ्गालक नवाब भेलाह, झगड़ा भेलेन्हि। तकर फलस्वरूप बङ्गालसँ राजमहल होइत सिराजुद्दौलाक सेना आएल। शौकतजंग सिराजुद्दौलाक सेनापतिक संग मनिहारीक समीप बल्दियाबाड़ीक निकट युद्ध कएल जाहिमे शौकतजंग मारल गेलाह। तकर बाद किछुए-किछुए दिन पर सैनिक प्रशासकक परिवर्तन होइत गेल। १७६५ ई०मे जखन ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ बङ्गाल बिहार एवं उड़ीसाक दिवानी भेटलैक तँ पूर्णियाँ पर सेहो अङ्गरेजक आधिपत्य भए गेल। १७६९ ई०मे पूर्णियाँमे प्रथम कलक्टर जार्ज गुस्टावस डकारेलक नियुक्ति भेल। ओहि समयमे ओ लोकनि कलक्टर नहि कहाए सुपरवाइजर कहबैत छलाह। १७७२ ई०क बादसँ किछु वर्ष धरि भारतीय लोकनि दीवान नामसँ कलक्टरक कार्य करैत रहलाह। राजा देवी सिंह पूर्णियाँक एक एहने दीवान छलाह। एहि बीच अङ्गरेज लोकनि कतेक प्रकारक शासन सम्बन्धी प्रयोग कएलेन्हि जाहिसँ प्रजाकेँ बड़ कष्ट भेलैक। १७७० ई०मे

पूर्णियाँमे भयङ्कर अकाल पड़ल जाहिमे लगभग आधा निवासी पञ्चत्वकेँ प्राप्त कएल। १७८६ ई०मे जखन लार्ड कार्नवालिस भारतवर्षक गवर्नर जेनरल भेलाह तँ ई निश्चय भेल जे जमीन्दार लोकनिकेँ भूमिस्वामी (प्रोपराइटर) बनाए देल जाए एवं राजस्व ओसूलीकार स्थायी रूपेँ हुनके लोकनिक हाथमे दए देल जाए। तदनुसारे १७९३ ई०मे पूर्णियाँमे सेहो चिरस्थायी प्रबन्ध कएल गेल। एहि व्यवस्थाकेँ लागू करबाक समयमे मिस्टर एस० हिटली पूर्णियाँक कलक्टर तथा मिस्टर कोलब्रुक एसिस्टेन्ट कलक्टर छलाह। १७९३ ई०मे जेना हम पूर्वँहि कहि चुकल छी, पूर्णियाँक रकबा ५००० वर्गमीलसँ अधिक छल जाहिमे २००० वर्गमील पर तँ रानी इन्द्रावतीक जमीन्दारी छलेन्हि जनिक मुख्य ड्योढ़ी रानीगंजक समीप पहसरामे छलेन्हि। लगभग २००० वर्गमील पर महाराज दरभङ्गाक जमीन्दारी छल तथा लगभग १५० वर्गमील पर बनैलीक जमीन्दारी छल। सम्पूर्ण धर्मपुर परगना महाराजक जमीन्दारीमे पड़ैत छल। सुलतानपुर, हवेली, कटिहार आदि परगना रानी इन्द्रावतीक जमीन्दारीमे छल। तीरारयारदह तथा असजा बनैलीक जमीन्दारीमे छल। लगभग तीन चौथाइ पूर्णियाँ पर मैथिल जमीन्दार लोकनिक आधिपत्य छल।

डा० बुकाननक मत अछि जे ओहि युगमे पूर्णियाँ जिलाक अधिकांश भागमे कालिदास, मनबोध आदिक रचना तथा पुराणादि, लोक मैथिली भाषामे सुनैत छलाह जनिका संस्कृतक प्रज्ञा नहि छलेन्हि। एहि जिलामे मुङ्गेरक भृगुराम मिश्रक

लिखल 'रास-विहार' 'सुदामा चरित' 'दानलीला' आदि ग्रन्थ लोक पढ़ैत छलाह। मनबोध रचित दानलीला तथा हरिवंश जे विशुद्ध मैथिली भाषामे अछि तकर पूर्ण प्रचार छल। गीत गोविन्दक गीत तऽ जेना सभक जिह्वा पर छलैक। डा०बुकाननक मतें मनबोध ओ जयदेव दुहू मैथिल ब्राह्मण छलाह। एहि प्रसङ्गमे श्रीमती राजेश्वरी देवीक लेख 'रमानाथ अभिनन्दन ग्रन्थ'मे द्रष्टव्य थिक। दरभङ्गाक महाराज माधव सिंह ओ हुनक उत्तराधिकारिओ लोकनि ख्याति प्राप्त पण्डित लोकनिकें समय-समय पर सम्मानित करैत छलथिन्ह। रानी इन्द्रावती एवं हुनक पति राजा इन्द्र नारायण राय तथा राजा रामचन्द्र नारायण राय आदि विशेष रूपें एहि जिलामे मैथिल संस्कृतिक पोषक छलाह। कतेको पण्डित एवं गुणीजन हिनका लोकनिसँ पालित छलाह। उनैसम एवं बीसम शतकक पूर्वार्द्धमे बनैली परिवार द्वारा मैथिल संस्कृतिक रक्षाक हेतु बहुतो प्रयास कएल गेल। कलिकर्ण दानवीर लीलानन्द सिंह द्वारा गुणीजन सतत समादृत होइत रहलाह। हम भैरव दत्त मल्लिकक नाम आदर भावें लेब जे चिरस्थायी प्रबन्ध (Permanent Settlement) केर पूर्व पूर्णियाँमे कानूनगोक पद पर प्रतिष्ठित छलाह तथा जमीन्दार सेहो रहथि। कहल जाइत अछि जे ओ अमौरक निवासी छलाह। हिनके वंशमे १७८६ ई०मे हेमन मल्लिक भेल छथि आ' मल्लिकेजी श्री हरिलाल सिंहक असजा स्टेटक देख-रेख करैत छलथिन्ह। अमौर बनैली राज्यक एक पट्टीक निवासस्थान छल। मानिक नन्दन चौधरी एवं

परमानन्द चौधरी देवानन्द चौधरीक सुपुत्र छलाह। तीराखारदह स्टेट परमानन्द चौधरीक हिस्सामे तथा असजा स्टेट मानिक नन्दन चौधरीक हिस्सामे पड़लैन्हि। वर्त्तमान बनैली परिवार परमानन्द चौधरीक सन्तान थिकाह। मानिक नन्दनक वंशज पश्चाति निःसन्तान भए गेलथिन्ह। कहबाक तात्पर्य ई अछि जे पूर्णियाँक एक पैघ भागमे उपर्युक्त श्रीमान् लोकनिक द्वारा मोरंगसँ गङ्गाकात धरि एवं महानन्दासँ वर्त्तमान कोशीक कात धरि मैथिल संस्कृतिक पोषण भेल।

वर्त्तमानयुगमे मालद्वार स्टेटक जमिन्दार लोकनि तथा बनैली एवं श्रीनगरक राजवंश द्वारा मैथिलीक पूर्ण सेवा भेल अछि। राजा कमलानन्द सिंह 'सरोज' राजा कालिकानन्द सिंह, स्व० टंकनाथ चौधरी आदिक द्वारा जे मैथिलीक सेवा भेल अछि से अविस्मरणीय अछि। सम्प्रति कुमार तारानन्द सिंह, कुमार वैद्यनाथ चौधरी आदिक विशिष्ट सेवा मैथिलीकें प्राप्त भए रहल अछि। पं० व्रजमोहन ठाकुर अधिवक्ता (पूर्णियाँ)क नाम हम सगौरव लैत छी जनिक सत्प्रयासक अभावमे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकें स्थान नहि भेटि सकैत। हमरालोकनि कें एखनहुँ मैथिली सँ सम्बद्ध समस्याक समाधान हेतु ठाकुरजीक सत्परामर्श भेटैत रहैत अछि। जहानपुरक स्वर्गीय पं० पुण्यानन्द झा मातृभाषा मैथिलीमे अनेक ग्रन्थक प्रणयन कएलैन्हि। परबहाक पं० माधव मिश्र प्रारम्भहि सँ मैथिलीक प्रगतिक हेतु अग्रगण्य रहलाह अछि। स्वर्गीय पं० शिवानन्द चौधरीक कपाल-कुंडलाक मैथिली

अनुवाद पूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त कएलक। स्व० कुमार गङ्गानन्द सिंहक मैथिली-सेवा स्तुत्य अछि। हिनक कृति सम्पूर्ण मैथिली-जगतमे प्रसिद्ध अछि। धमदाहा निवासी डा० जगदीशचन्द्र झाक हालहिमे 'सात समुद्रपार' पुस्तक प्रकाशित भेल अछि से मैथिलीमे यात्रा-विषयक साहित्यक पूर्त्ति कएलक अछि। डा० झा एकर अतिरिक्तो बहुत किछु कार्य मैथिलीक हेतु कएल अछि। डा० विश्वेश्वर मिश्र तथा प्रो० जगदीश मिश्र यद्यपि दरभंगा निवासी थिकाह तथापि हिनका लोकनिक कार्यस्थल तँ पूर्णियाँ अछि। ई दुनू गोटे पूर्णियाँ कॉलेजमे मैथिलीक प्राध्यापक छथि तथा अपन विषयक गम्भीर विद्वान छथि एवं मैथिलीक सेवामे सतत तत्पर रहैत छथि। एकर अतिरिक्त श्री इन्द्रानन्द मिश्र (बशी पुड़न्दाहा), श्री मुरलीधर सिंह, श्री विभूतिनाथ पाठक, पं० मोदानन्द झा (पंजीकार), पं० राजेन्द्र झा (धमदाहा), श्री कमलआनन्द श्रीमती राजेश्वरी देवी (धर्मपत्नी पं० विद्यानाथ झा, जिला अभियन्ता, जिला परिषद पूर्णियाँ), पं० उमाकान्त झा 'बंधु', श्री बैद्यनाथ राय, श्री उपेन्द्रमिश्र 'नलिन, श्री जगदीश मिश्र 'प्रशान्त', स्व० पं० लक्ष्मीनाथ मिश्र, स्व० कृष्णमोहन झा 'कृष्ण', पं० महावीर झा (रहिपुरा), पं० कामेश्वर झा (सुखसेना), पं० घनश्याम मिश्र, श्री मधुकर गंगाधर, श्री ब्रह्मानन्द त्रिवेदी, श्री वैद्यनाथ चन्द, श्री मेदनी प्रसाद सिंह 'मेदनी, स्व० गोविन्द शुक्ल, श्री योगेन्द्र कलाकार, श्री अमोघ नारायण झा 'अमोघ', श्री अनिरुद्ध झा, श्री कपिलेश्वर झा, श्री कुमुदधारी चौधरी

'पिनाक', विद्यालङ्कार श्री उग्रानन्द झा (सुखसेना) श्री अभय नाथ मिश्र (कटिहार), पं० निधिनाथ झा, पं० कीर्त्यानन्द राय आदि विद्वान मैथिलीक हेतु प्रेरणाक स्रोत रहलाह अछि। धमदाहा निवासी रवीन्द्रजी एक अद्भुत प्रतिभा लए माँ मैथिलीक सेवा कए रहल छथि। आइ सम्पूर्ण मिथिलामे हिनक यशोगान भए रहल अछि। पूर्णियाँ मे विद्यापति-पर्वक अवसर पर यात्रीजी हिनका 'अभिनव विद्यापति'क संज्ञासँ विभूषित कएल।

पं० शुभंकर झाजी, अपर समाहर्त्ता यद्यपि पूर्णियाँक निवासी नहि छथि, तथापि सरकारी सेवाक प्रसंगे ई सात-आठ वर्ष पूर्णियाँ मे विभिन्न पद पर रहलाह अछि। इ स्वयं संस्कृत साहित्यक एक विशिष्ट विद्वान छथि ओ मैथिली मे सेहो छिट-फुट रचना करैत छथि। पूर्णियाँ मे विद्यापति गोष्ठीक जन्म हिनके प्रेरणाक स्वरूप भेल आ' हिनके सत्प्रयासक कारणेँ हमरा लोकनि नियमित रूपें' विद्यापति पर्व' प्रतिवर्ष मनाए रहल छी। हिनकर 'पूर्णियाँ वन्दना' कविता जकर पाठ १९६९ ई०में मनाओल विद्यापतिपर्वक अवसर पर भेल, समुपस्थित विद्वान द्वारा अत्यन्त प्रशंसित भेल।

एकर अतिरिक्तो अनेकानेक महानुभाव लोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सेवामे संलग्न छथि परन्तु अज्ञानवश हम हुनकालोकनिक उल्लेख नहि कए सकलहुँ अछि।

—आचार्य मदनेश्वर मिश्र